सुवर्ण नामावली

स्तम्भ

श्री वर्द्धमान स्थानकवासी जैन श्रमण संघ के प्रधान मन्त्री मुनि श्री १००८ श्री आनन्द ऋषिजी महाराज

संरक्षक—श्री नेमीचन्दजी सरदारमलजी पुंगलिया इतवारी नागपुर

आजीवन सदस्य (LIFE MEMBERS)-

१ श्री हीराचन्दजी मन्नालालजी पारख सदर बाजार, नागपुर।

२ श्री माणकचन्दजी खेमराजजी सुराणा सदर बाजार, नागपुर।

३ श्री बेंकटीमलजी रिखबचन्दजी, धामक।

आश्रयदाता—

१ श्री चन्दनमलजी चौथमलजी बोहरा, पीपला।

२ ,, मालकचन्दजी रतनचन्दजी मटोवड़ा राहू।

३ ,, फतेहराजजी चम्पालालजी संघवी सिन्धी।

४ ,, हीरालालजी ताराचन्दजी गुगलिया बाबुलगांव।

५ ,, सकल जैन संघ धमाला (बर्गापुर)।

६ ,, जैन संघ, चाँदूर बाजार जि० अमरावती।

७ ,, हीराचन्दजी फूलचन्दजी पारख सदर बाजार, नागपुर।

८ ,, ओंकारलालजी निर्मलजी बाफना मन्दसौर।

॥ श्री अमृत काव्य संग्रह ॥

रचयिता:—

शास्त्रविशारद प्रौढ कवि पं० मुनि श्री अमीऋषिजी म.

सम्पादक:—

श्री वर्द्धमान स्थानकवासी जैन श्रमण संघ के प्रधान मन्त्री

पण्डित रत्न मुनिश्री आनन्द ऋषिजी म. सा.

मूल्य

बारह आना

प्रथमावृत्ति २०००

वीर सं. २४८२
ई. सन् १९५६
वि. सं. २०१२

प्रकाशक—
श्री रत्न जैन पुस्तकालय, पाथर्डी (अहमदनगर)

मुद्रक—
श्री जैनोदय प्रिंटिंग प्रेस, रतलाम

धन्यवाद

प्रिय वाचकवृन्द !

आपके कर कमलों में श्रीरत्न जैन ग्रन्थमाला का "अमृत काव्य सग्रह" नामक पुष्प समर्पण करते हुए हमें प्रमोद होता है ।

इस पुस्तक में बोधप्रद, वैराग्यवर्धक, शान्तिदायक एव चित्ताकर्षक काव्यों का संग्रह किया गया है अतः काव्य रसिक तथा साहित्य प्रेमी सज्जन इस काव्य से लाभ उठावेंगे ऐसी आशा है ।

इस पुस्तक की दो हजार प्रतियों के प्रकाशन में श्रमणसंघीय प्रधान मन्त्री पं. रत्न श्री १००८ श्रीआनन्दऋषिजी म० के ससार पक्षीय निम्न लिखित गुगलिया परिवार ने अपनी उदार भावना के फल-स्वरूप सहायता प्रदान की है.—

(१) श्रीमान् वख्तावरमलजी लखमीचन्दजी गुगलिया राणावास
(२) श्रीमान् सेंसमलजी मिश्रीमलजी गुगलिया, घटावर
(३) श्रीमान् सेंसमलजी गणेशमलजी गुगलिया, घटावर
(४) श्रीमान् ससमलजी हस्तीमलजी गुगलिया, घटावर

एतदर्थ उपर्युक्त सभी दानी महाशय धन्यवाद के पात्र हैं ।

इस पुस्तक के प्रूफ संशोधनादि कार्य में श्री पं. वसन्तीलालजी नलवाया ने अपने परिश्रम का सहयोग दिया अत. वे भी धन्यवाद के पात्र हैं ।

मन्त्री, श्री रत्न जैन पुस्तकालय, पाथर्डी

सुप्रसिद्ध कविवर्य प. रत्न मुनि श्रीअमीऋषिजी महाराज का

जीवन परिचय

आपके पिता श्रीभैरूलालजी दलोट (मालवा) के निवासी थे। आपकी धर्मपत्नी श्रीप्यारांबाई की कूख से वि. सं. [illegible] में आपका शुभ जन्म हुआ। तेरह वर्ष की उम्र में पं. र. श्रीसुखाऋषिजी म. से मार्गशीर्ष कृष्णा ९, सं० [illegible] में आपने दीक्षा अंगीकार की। मगरदा (भोपाल) में दीक्षा की विधि सम्पन्न हुई। आपकी बुद्धि बड़ी ही तीक्ष्ण थी और धारणा शक्ति भी गजब की थी। इन दोनों अनुकूल निमित्तों के साथ अध्ययन की रुचि और श्रम का सम्मिश्रण हो जाय तो विद्या का विकास आश्चर्यजनक हो जाता है। सौभाग्य से आपको यह सब चीजें प्राप्त थीं। अतएव आप जैनागमों में तो मनीषी हुए ही, साथ ही प्रत्येक प्रचलित मत के ग्रन्थों के भी अच्छे ज्ञाता हो गए। इतिहास की ओर आपकी गहरी रुचि थी। शास्त्रीय एवं दार्शनिक चर्चा में भी आप अत्यन्त विचक्षण थे। इस विषय में आपने बड़ी ख्याति प्राप्त की थी। कई स्थानों पर मूर्तिपूजक सन्तों के साथ शास्त्रार्थ करके आपने विजय प्राप्त की थी। एक बार दिगम्बरों से शास्त्रार्थ करने के लिए आप बागड़ प्रान्त में पधारे थे। वहाँ आहार-पानी का सुयोग न मिलने के कारण आपको घोर परीषह सहन करने पड़े। लगातार आठ आठ दिन तक छाछ में आटा घोल कर पिया और उसी के आधार पर रहे। यही आपका भोजन और यही पानी था। इस परिस्थिति में आप शान्त संतुष्ट और प्रसन्न थे। ऐसे विकट और प्रतिकूल प्रसंगों पर आपका धैर्य देखने योग्य होता था। कितना और कैसा भी संकट क्यों न आ जाए, आप

(१९) विविध बावनी
(२०) शिक्षा बावनी
(२१) सुबोध शतक
(२२) मुनिराजों की ८४ उपमाएँ

(२३) अम्बड संन्यासी चौढालिया
(२४) कीर्तिध्वज राजा चौढालिया

(२५) सत्य घोष चरित
(२६) अरणक चरित
(२७) मेघरथ राजा का चरित
(२८) धारदेव चरित

साहित्यिक दृष्टि से आपने खड्गबंध कपाटबंध कलशबंध मत्स्यबंध कमलबंध चमरबंध एकाक्षर त्रिपदीबंध कटारीबंध गोमूत्रिकाबंध चक्रबंध पुष्पाम्बरबंध धनुर्बंध नागपाशबंध कटारबंध चौपटबंध, चोकीबंध स्वस्तिकबंध आदि-आदि बहुत-से चित्रकाव्यों की रचना की है। इनमें से कुछ काव्य श्रीअमोल जैन ज्ञानालय धूलिया से प्रकाशित भी हो चुके हैं। आपने काव्यमय 'जयकुंवर' की बड़ी ही सुन्दर कृति रची है, जो अवलोकनीय है और आपकी कवित्व प्रतिभा का परिचय देती है।

आपश्री का जयपुर सीतामऊ, इन्दौर आदि ऐसे क्षेत्रों में भी पदार्पण हुआ था जहाँ कवि-मण्डली थी। उन कवियों ने आपको जो समस्याएँ दीं उनकी आपने अत्यन्त भावपूर्ण हृदयस्पर्शी अनुभूतिमय और साथ ही शिक्षाप्रद पूर्ति की है। इन सब काव्यों को देख कर निस्संकोच कहा जा सकता है कि आप श्रेष्ठ प्रतिभाशाली कवि थे। सन्त साहित्य में आपकी रचनाएँ महत्त्वपूर्ण स्थान रखती हैं। आपकी कविता की भाषा सरल सुबोध और प्रसाद गुण युक्त है। आपने छन्द शास्त्र पर भी बराबर ध्यान रखा है और अपनी रचनाओं को छन्दोभंग के दोष से पूरी तरह बचाया है। इन सब दृष्टियों से पंडित मुनिश्री अमीऋषिजी महाराज स्थानकवासी परम्परा के सर्वोत्तम कवि हैं। आपकी र स्य कवि इस परम्परा में विरले ही मिल सकते हैं।

सब दृष्टियों से [illegible]
तुलना में ठहरने योग्य कवि इस परम्परा में विरले ही मिल सकते हैं।

आपश्री को सुलेखन कला के प्रति भी बड़ा अनुराग था। आपके अक्षर अत्यन्त सुन्दर थे। आपने शास्त्रीय लिपि में, अपने स्वाध्याय के लिए स्वय ही श्रीवृहत्कल्प, प्रश्नव्याकरण, सूत्रकृतांग, अनुयोग द्वार आदि शास्त्र लिखे हैं। तेरह आगम आपको कंठस्थ याद थे।

सं० १९४९ में गुरुवर्य श्रीसुखाऋषिजी म० ने वम्बई में चातुर्मास किया था, तब आप भी साथ थे। सूरत-सम्मिलन के अवसर पर आप मौजूद थे।

आपश्री के शिष्य श्रीओंकारऋषिजी तथा श्रीदयाऋषिजी म. संसारपक्ष के वन्धु थे। श्रीदया-ऋषिजी म की प्रज्ञा अत्यन्त निर्मल थी। कोई भी श्लोक या गाथा दो तीन वार देख लेने से ही उन्हें कण्ठस्थ हो जाती थी। उनमें भी कवित्व शक्ति का अच्छा विकास हुआ था।

मालवा, मेवाड़, मेरवाड़ा, मारवाड़, गुजरात, काठियावाड, देहली तथा महाराष्ट्र आदि प्रांतों को आपने विहार करके पावन किया और जिनशासन का उद्योत किया।

सं० १९८२ में दक्षिण महाराष्ट्र में पदार्पण करके आपने ऋषि सम्प्रदाय के संगठन के लिए बहुत प्रयत्न किया। अहमदनगर में विराजित सन्तो और सतियों ने आपको ही पूज्य पदवी प्रदान करने का विचार किया, किन्तु उस समय काललब्धि न आने से प्रयत्न सफल न हो सका। आप दक्षिण से मालवा की ओर पधारे और अनेक क्षेत्रों में विचरते तथा धर्म प्रभावना करते रहे। ४५ वर्ष तक संयम पर्याय में व्यतीत करके, मिती वैशाख शुक्ला १४, सं० १९८८ को सुजालपुर (मालवा) में स्वर्गवासी हो गए। उस समय आपकी आयु ५८ वर्ष की थी।

पं० रत्न मुनिश्री अमीऋषिजी म० एक वरिष्ठ विभूति थे। आपने अपने जीवन में चतुर्विध

श्रीसंघ का और संसार का महान् उपकार किया। जिनशासन की शोभा बढ़ाई। आपके सदृश शास्त्र वेत्ता,सुलेखक,सुकवि और धर्मोपदेशक उत्पन्न होकर जगत् के जीवों का कल्याण करें,यही मनोकामना है।

लेखक:—

श्री वर्द्ध० स्था० जैन श्रमण संघ के पं० रत्न प्रधान मन्त्री
श्री आनन्दऋषिजी म० के शिष्य पं० मुनिश्री मोतीऋषिजी म०

श्री अमृत काव्य संग्रह पर

मरुधर केसरी मन्त्री मुनि श्रीमिश्रीमलजी म० का

अभिप्राय

पावनता चित्त में उमगे मन मानस में बिरसा घनपावस।
पाप हरन पीयूष मनोरथी धनी सबही पर भाव को शीघ्र अरावस॥
काव्य बखान सुधामृत के सुनके सुनके कमहु न अघावत।
पीयूष पान करो 'मिसरी'' मान अध्यातम को शु प्रकासत॥

सं० १-१-२१] —ब्यावर (ब्यावर)

॥ ॐ नमः सिद्धेभ्यः ॥

अमृत काव्य संग्रह

शिक्षा-बावनी

॥ दोहा ॥ प्रणमूँ श्री चोवीस जिन, गौतमादि गुणधार ॥
सरस्वती माता नमन करी, वर बुद्धि विस्तार ॥ १ ॥
अभिपात्मा नमूँ, पंच परम पद सार ॥
सद्गुरु उपकारी महा, ज्ञान दान दातार ॥ २ ॥
स्वपर हित हित कारणे, रचूँ बावनी सार ॥
शिक्षा शीतद्रि भणो, सुन्दर महा हितकार ॥ ३ ॥

रचयिता — शास्त्र विशारद पंडित रत्न श्री अमीऋषिजी म०

|द्धं.| धन्य जगमांही सुख दु ख आया धारे धीर,जाणे परपीर मन टारे जग फदको।
करत विचारी काम बोलत मधुर वेण, क्षमा दया चित्त धारे, वारे कर्म बधको ॥
मन तन वचन सु करे उपकार नित्य, देव गुरु आण गहे, रोकत स्वच्छद को।
अमीरिख कहे वलिहारी वाकी वारबार, धन्य वाकी मानको सो जाए ऐसे नदको ॥५

|अ.| अगर अगन पर धरत सुगध होत, तपावत वारवार हेमद्युति दरसे।
दूध को तपावे स्वाद, काटत चदत वास, तिल तेल इक्षु को पीलत रस तरसे ॥
देवे पय सुरभि चरण को बधन किये, देत फल अब जो ये मारत पत्थर से।
अमीरिख कहे तैसे सत कुलवत मित, गिणे नहीं पीड उपकार तस कर से। ६॥

|आ.| आउखो,अथिर,जैसे,विद्युत उजासमम,राखे आस मोटी पडे खवर न पलकी
तामे कूड कपट झपट कर ठगे लोक, राग द्वेष वश होय, करे वात छलकी ॥
तृष्णा की लाय लाग रही घट माहे अती, पातक की पोट सिर कैसे होय हलकी।
अमीरिख कहे प्राणी धारिये सतोष मन, करमो के वीज वाल्या मौज है अचलको ॥

|इ.| इण मोह जालमाही वीत्यो है अनतकाल नाना जोनिमाही कष्ट सह्या है अपाररे
क्रोध मान माया लोभ रागद्वेष वश जीव, पायो दु ख अनत न छोडत गवाररे ॥
आपाको विसार पर गुणमें मगन होय, वाधत करम नहीं करत विचार रे।
अमीरिख कहे छोड सकल जजाल भव्य, धार गुरु सीख वेगा जाग हो हुश्याररे ॥

।ॠ.। ऋद्धि नहीं पावे कोई सुकृत कमाई विन, छोड़ घर देश परदेश जाय दौड़े है।
नाना भात करत व्यापार जीव घातनके, कीमिया के काज नेह कुगुरु से जोड़े है॥
चोरी करी सहे दंड, पड़त है कैद माही, सहे अति मार नहीं ममता को मोड़े है।
अमीरिख कहे धन अति काज देखे दुःख काल आये घेरयो तोउ तृष्णा न तोड़े है॥

।लृ.। लियो नहीं सुजस, न गायो है जिनेशगुण छायो घट पाप नेड़ो आयो न धरमके,
लूट्या है जीवों का प्राण दया नहीं लायो मन, लुंकाइ आपण वेण बोल्यो है मरमके।
कूडा तोला मापा कर ठग्या है जगत लोक, काम में विकल नहीं लायो है सरमके।
करके ममत मूढ सिधायो नरक माही, अमीरिख कहे वश होयगा करमके ॥१४॥

।ॡ.। लीला माहे लीन भयो लीनो न धरम धन दीनो परदुःख मन पोर न विचारी है,
आश्रव प्रमाद मद कषाय विषय माही, भीनो रहे रातदिन, पाप अधिकारी है॥
चिंत्या नहीं देव अरिहंत निगरंथ गुरु, करुणा धरम चित्त, माही नहीं धारी है।
अमीरिख कहे यों, चल्यो हारके मनुष्य भव, चारु गति माही भरमर हुवो ख्वारी है

।ए.। एक वार अशुभ करम वश नरकमें, पायो है अनेक कष्ट, सही जगमार है।
एक वार तिर्यंच रु थावर निगोद माही, जनम मरण नहीं, वेदना अपार है॥
शुभ करमो के वश देवगति पायो जीव, विलस्या अनूप सुख, आनंद उदार है।
भटकत भटकत, पायो है मनुष्य भव, अमीरिख कहे सद्गुरु सीख धार है ॥१६

|अः.| अक्षर लिखित शुभाशुभ निज साचत को, ताही अनुसार जीव, सुखदुख पावे है
कोई नर सुखी कोई दु'खी कोई निर्धन, कोई नर धनवत आदर बुलावे है ॥
कोई हाथी घोड़ा चढ चालत आनंद माही, कोई पुन छित ताके चाकर कहावे है।
कोई रंग महलमें पडे कोई बधन में, अमीरिख एते खेल करम करावे है ॥२१॥

|क.| करत जगत धध अघके समान सुख, ऐशमे भुलायो मन त्रास नहीं कालकी।
उडी उडी नींव देइ, चुणावे आवास जाली, झरोखा अटारो चित्र शोभा सुरसालकी
मात तात नारी सुत, मोहमें वधाय रह्यो, तृष्णा अधिक चित्त करे धनमाल की।
अमीरिख कहे घट रोके जब मौत आय, जावे सब छोड वाघ पोट पाप जालकी॥

|ख.| खर ज्यों जनम अरण लेखे ते गमायो जीव, कियो नहीं सुकृत मनुष्य देह पायरे
गुणि जन सगत न सत को नमायो शीस, प्रभु नाम लियो नहीं निंदा मन भायरे ॥
धरम की सीख नहीं भावत करम वश नींद में गमाई रात, दिन काम मायरे।
अमीरिख कहे भारे सारी नव मास मात, आयो मुष्टि बांध कं पमार हाथ जायरे॥

|ग.| गरभ में आयो तव पायो है अपार दु ख जाणे निज चेतन के जाणे किरतार है
अशुचिमें वास रह्यो, सवा नव मास चित्त, देखरे विमास तिहा, सुख न लिगार है॥
नीचो सिर ऊँचा पाय, अब ज्यू रह्यो टेराय, निकस वाहिर दिये, दु ख को विसार है
अमीरिख कहे घरे गरव गुमान मन, पापके न्थिये से फिर, वहीं ठौर त्यार है॥२४

।ज.। जाना है जरूर घर दूर है चेतन तेरा, मौत फिर रही सिर पलमें गिरावेगा।
बाप दादा तेरो न कमायो चले दाम संग, आगे नहीं ज्ञाति देइ आदर बुलावेगा॥
चार कोस जाय तव, बाधत खुराक साथ, चित्त में विचार परलोक कहाँ खावेगा।
अमीरिख कहे लीजे, तप जप व्रत संग, अवसर चूके जीव पीछे पिछतावेगा॥२९॥

।झ.। झपटके जैसे बाज धावत है तीतरको, जैसे वनराज आय मृग गृही लेत है।
मकडी ज्यों मक्षिकाको, आयके ग्रसत वेग, मेंढकको अहि ज्यों अचान दगो देत है॥
मूसाको मंझार जैसे, ताक कर गटकत, तैसे तोय काल आय लेगा गुरु केत है।
अमीरिख कहे तव खूटेगा उपाय सब, ऐसी न विचारे मन, सोचत अचेत है॥३०॥

।न.। नाना भांत तोय समझावे गुरु वारवार, संसार असार सार मानके लुभाना है।
नानापन छोड नहीं दानापन धारे चित्त, मोहमे लुभाना अधिकाना पाप ठाना है॥
मानमें भुलाना गुरुदेव नहीं माना, शुद्ध देव न पिछाना कर्म किये छाना छाना है।
अमीरिख कहे स्याना अंतकाल हाथ जाना, कुंभीपाकमें पचाना तबे पछताना है॥

।ट। टले नहीं काल लोपे करत उपाय क्रोड, मेरु शिर रहो भावे समुद्र मंझार है।
बक्तर सजीने तन, धारत आयुध सब, पेसे सात कोटडी में, देइ दृढ द्वार है॥
रक्षक मनुष्य द्वार द्वारपै रहे असंख्य, होय हुशियार हाथ लेइ हथियार है।
अमीरिख कहे काल आयके लियो उठाय, जतन धरे ही रहे खडे परिवार है॥३२

|त.| तन है असार नर, कीजिये विचार मन, पिंजर है हाड तापे चाम जो मढाना है।
दुरगंध खाना तू तो मानत है मेरा मेरा, अंत न्यारा तन, जान तू समाना है ॥
मागत है खाना नहीं देव तो हगन करे, जोगत अनेक चाव,तोहु न अघाना है।
अमीरिख कहे तन काचा कुंभ जैसे जान,रंग चंग देख नर, भया क्या दिवाना है ॥

|थ.| थिरना रहेगो यो गरूर ना रहेगा मद पूर ना रहेगो देह धूरमें मिलायगो।
धन ना रहेगो ना रहेगो तन निकास पन योवन ये तेरा छिन एकमें बिलायगो ॥
करले भलाई भाई छोडी चल छल मद अंत तन य देह तेरी आग में मिलायगो।
कहे अमीरखि,चल्यो जायगो अकेलो, तब तेरो हितकारो कोऊ संग ना चलायगो ।

|द.| दया है धरम मूल जाणी अनुकूल प्राणी, धारो चित्त माही भव २ सुखकार है।
समुद्रमें नाव भूला जनको मारग दाता,प्यासा को शीतल जल भूखेको आहार है ॥
पक्षीको गगन जैसे,लाकडी है अबलेको, तैसे भवि जीव ताको दया ही आधार है।
अमीरिख कहे भवि, कालो चित्त भाव आणी, दयासे अनंत जीव, पाम्या भवपार है।

|ध.| धार शुद्ध भाव मन गमार तारणहार भाव बिन कीना सब, तप जप करणी।
भाव मरुदेवी नंद खटखंड पति भरतजी, केवल सुज्ञान पाय मेटी भव फिरणी ॥
कोटि भव संचित पातक जाय निरलाय, तिमुख ताता दुरगति दुखहरणी।
अमीरिख कहे भव तारण जहाज सम भावना प्रधान जैन आगममें वरणी ॥४०

न.। परमव पावक गमावो तन योगमें राख्यो नहीं निजगुण खोय गयो भूलमें
कान वश हिरण पतंग नैन वश मरे नासिका के वश मरे भमर ज्यूं फूल में।
रसनासे मीन कायावश गजराज मरे आसक्त ह काम पांचो खाय माख भूलमें॥
अमीरिख कहे नर पांचो को पोषोही वश जनम अमोल हार जाय मिल्यो धूलमें।

प। प्रभु नाम खिए सब विपन विलाय जाय गरुड शबद सुन भाग होय व्याल को
महामेघ खिमिर पुलाय ज्यों दिनरा पते गेप बरसत दूर करत दुकाल को॥
चिंतामणि होय वहाँ दारिद्र न रहे रंच धनंतर आवे मठे वेदन कराल को।
ऐसे जिन नामसे करमको न रहे भरा तेम प्रभु अमीरिख जपत त्रिकालको ।।४२

फ.। फूल्यो फूल्या फिरे क्यों काम शिर पाप रयो, जिनमें वेराग्य करे काम भगवंत है॥
बालक जवान वृद्ध दरिद्र धनवंत सुखी दुःखी नर नहीं छोडे ज्ञानी संत है।
ऐसे जिन चक्रवर्ती बलदेव वासुदेव इन्द्र चंद्र देव पशु ताको करे अन्त है।
अमीरिख कहे मोला तेरा ना गिरधत कहाँ ऐसी न विचारे मूढ सोवत निश्चिंत है

ब.। बालपन खेलमाही खोकके जवान भयो काम क्रोध आयो मद भूल्यो जिनराजने।
बुढापन आयो तब हुवो है निर्बल तन घेर लियो सांस खांस, छोडी सब लाजने।
नैन सुरत मंद मयस्या है सब हाथ पग कुटुम्ब रिसायो कोइ करे नहीं काजने।
अमीरिख कहे पर लियो जब काल आय चल्यो खाली हाथ नहीं लियो धर्म साजने

|भ.|भटकत मनरूप, अश्व महानेगवत, रुक्यो नहीं रहे करे नानाविध रंग है।
कवहू वैराग्य कवु मन में धरत राग, कवहू धरम कवु राचे पाप संग है॥
चार गति माहे भटकावे नहीं पावे पार, गिणी नहीं जाय जेमे उदधि तरंग है।
अमीरिख कहे मुनि, ज्ञान रूप वाग करो, लागत है मनवश, आनंद अभंग है॥४५

|म.| मनुष्य जनम धुर, पायवो दुर्लभ क्षेत्र, आरज उत्तम कुल चिर आयु धाररे
पूरण इंद्रिय जोग, तनमे समाधि निरलोभी सद्गुरु जोग, दुर्लभ विचार रे॥
श्रवण आगम वेण, सरधा दुर्लभ अति, धरम उद्यम किया, होय भवपार रे।
अमीरिख कहे प्राणी, दश बोल जोग पाय, तजके प्रमाद धार, दया धर्म साररे॥

|य| याद क्यों न करे जीव, सह्या जो नरक दुःख, निरंतर मारे मार, परम अधरमी।
अनंती है भूख प्यास रोग शोक खास ज्वर, परवश पणो है अनंतो शीत गरमी॥
अनंतो है भय कुंभी पाक वृक्ष सामलीको, अंग अंग छेद पार, सींचे तरे असरमो।
अमीरिख कहे नदी वेतरणी माही न्हाक्यो, याद कर दुःख मत होवे दुष्ट करमी॥४७

|र.| रात समे पखी मिल, रहत है वृक्ष पर, उगत सूरज दिसो दिसमें उडाना है।
वाजीगर खेल मेला महोत्सव माहीं नर, मिलत अनेक फिर जाय विरलाना है॥
घेनुपाल वनमाही, करत है गाय मेरी, साझ समे मडले अकेला घर जाना है।
अमीरिख कहे तैसे, मिल्यो परिवार आय, विछडत वार नहीं चेते न सयाना है॥४८

।स.। समकित विन नहीं पावे कोई शिव सुख समकित विन सब करणी असार है।
छार पर लीपण टीपण सूका चूना पर विलोवत नार जैसे, फोगट विचार है ॥
उपरमे वीज और कूटवो पराल पुंज, अंक विन शून्य मार, होय न लगार है।
अमीरिख कहे होग जनम मरण दूर, सेवो समकित इम जाणी नरनार है ॥७३॥

।ह. हंस और वक दोई होवत है एक रंग वाको मन सरल वो कपटकी खान है।
सोनो ने पीतल दोनों, होत है सरीखे रंग, रजत कथीर दोई होवे एक वान है ॥
कोकिल वायस दोनों, होवे है वरण एक, वेनु दूध थोहर को, रंग एक जान है।
रंग एक सम पिण गुणमें फरक अति, अमीरिख धरम अधरम वखाण है ॥७४

।च.। क्षमा सुखदाई फरमाई है धरम धुर, करत करम चूर, जिनेन्द्र जपती।
मुनि गजसुकुमार खंधक उतारी खाल मेतारज रिख तेव पाय रही रूपती ॥
पांचसे खंधक शिष्य, टाल्यो है करम विष, परदेशी क्षमाधारी निया कंठ चपती।
अमीरिख कहे क्रोध जीते सोही शूरवीर जनम मरण तज, पामे थिर संपति ॥७५॥

।त्र.। तृष्णा की लाय छाय रही घट माही तेरे, जोड जोड माया उंडो गाडके धरत है
धनमांहे पांती सात धरती अगन न्यात देवता भूपाल पानी चोर भी हरत है।
खर्च्यो न खायो नहीं, लायो है संतोष मन, मरी दुरगति गयो, विपत भरत है।
अमीरिख कहे नहीं आवे माया संग तेरे, मोटा मोटा राय मेरी मेरी के मरत है ॥

सुबोध शतक

॥ दोहा ॥

श्रीयुत शाति जिनाधिपनि, शाति करण सुखदाय ॥
अशुभ अमगल आदि सब, नाम लेत टल जाय ॥ १ ॥
श्रुत देवी वरदायिनी, समरो उर धरि हेत ॥
जासु कृपातें जडमति, बने सुबुद्धि निकेत ॥ २ ॥
चरण करण शिवपंथ पुनि ज्ञानदान दातार ॥
लहि रजा य गुरुराय की रचूं ग्रथ हितकार ॥ ३ ॥
घरथो नाम गुण जानि के, सुबोध शतक ग्रथ ॥
सुगुण सबे हिय धारिये, धर्म नोति को पथ ॥ ४ ॥

शारदा नाम—

प्रथम भारती देवो, दूजो सरस्वती तीजो शारदा सुनाम वर चोथो हंसगामिनी ।
पचमो विश्व विख्यात छट्ठो वागोश्वरी सुसप्तमो कौमारी अष्टमो है ब्रह्मचारिणी ॥
नवमो विदुषा देवी, दशमो सुब्रह्म सुता, ग्यारसो ब्रह्माणी वारमो है ब्रह्मवादिनी ।
प्रात उठो पठन करे जो वर नाम यह, होवे अमोरिख पै प्रसन्न श्रुतस्वामिनी ॥१॥

उपाध्याय वर्णन—

जगसे विरत होय, धारे जिनमत व्रत, ज्ञान क्रिया युक्त जिन मारग दिपावे है।
श्रुतज्ञानसिंधु अवगाही भये पार आये, कृपा करी और भवि जीवको पढावे है॥
संसय हरत गुण धरत पच्चास वर, मिथ्यात्वाको मान भग करिके हरावे है।
कहे अमोरिख ज्ञान भानु है प्रत्यक्ष जेह, ऐसे गुणधारी उपाध्यायजी कहावे है॥५॥

साधु वर्णन—

महाव्रत पच आदि सप्तविंश गुण जामे, जानि दु खमूल जग भोग भये त्यागी है।
निशदिन करत अभ्यास जिन आगमको, आतम स्वरूप साधवेकी मति जागी है॥
पुद्गल चाह तजी, बाराविध धारे तप, परीषह दुक्कर सहत शिवरागी है।
कह अमोरिख सबे करम कलक मेटो, पामे मोक्षवास ऐसे साधु बड भागो है॥६॥

अष्ट प्रातिहार्य—

वृक्ष है अशोक फूल, फल दल शोभित सुसिंहासन रतन जडित मनुहारी है।
चामर अनूप शुभ्र, ढारत सुरेंद्र मिली, छत्रोपरि छत्र तीन, ताकी छव न्यारी है॥
देव बरसावे विन जीवके कुसुम पुंज, दुदुभि बजत प्रभामडल उजारी है।
देशना प्रकाशे जिन शोभे प्रतिहार आठ, कहे अमोरिख अरिहंत उपकारी है॥७॥

शीश शीश कोटिमुख,प्रतिमुख कोटि जिव्हा त्योंही प्रतिजिव्हा कोटि भारती वसावे है
सागर अनंत परयत यों निरतर ही, या विध अनत भगवंत गुण गावे है।
कहे अमीरिख जिनराजके अपार गुण, काहूँ विध ताको नेक पार नहीं पावे है॥
कौन गिनी सके धन बुंद वन पत्रनको, सागर तरग सख्या, कहिके बतावे कौन ?
कौन कर अगुलतें माप पुहवीको करे, सुमेरु गिरिको तोल, करिके दिखावे कौन ?
कौन रतनागर भुजातें तिरी पावे पार, अवर में उडी नभ अतके सुनावे कौन ?।
कहे अमीरिख जिनराजके अनत गुण, मंदमति नर पूरे गुण कथि गावे कौन ?१२

श्रोता के १४ गुण--

भक्तिवत बोले मीठे वचन गरव त्यागी, सुणिवेको रुचि किते चित्त ना डुलावे है।
सुणे सो प्रगट कहे प्रश्न करो जाणे पुनि, सुणे घने सूत्र नींद आलस न आवे है॥
बुद्धिवत दाता गुरु महिमा वढावे भूरि, प्रीतिवत होय निंदा ओगुण न गावे है।
कहे अमीरिख दश चार गुणधारी ऐसो, सरल विवेकी नर श्रोता सो कहावे है॥

वक्ता के १४ गुण—

ज्ञाता बोल षोडश सिद्धातके अरथ ठाने, औसरको जाने वाणी मधुर उच्चारे है।
सशय निवारे गीतारथ उपयोगी वर, सत्यवादी आगम सकोच विसतारे है॥
त्यागे अपशब्द मन सभाको रिझावे प्रश्न, अरथको ग्रहे पै न मान उर धारे है।
धरमी सतोषी दश चार गुण धारी कहे, अमीरिख वक्ता सोही, भवजल तारे है १४

मौन-गुण—

मौन करी रहे नाहीं आश्रव के वेण कहे, संवर के काज मृदु वचन उच्चारे है।
बोलत है प्रथम विचारी निज हिये माही, जीव दया युत उपदेश विसतारे है॥
आगमके वेण ऐन, माने सुखदेन पेन, माने मिथ्या केन चित्त ऐसी विध धारे है।
कहे अमीरिख मुनि ऐसे मौनधारी होय, तारण तरण सोही सुगुरु हमारे हैं॥१८

सुगुरु-महिमा—

धन्य गुरु मोरे जग-भोग को असार लखी, त्यागी के ममत्व पाप-ग्रंथीको विछोरे है।
काम मोह डोरे केलतातु जिम तोरे, प्रीति संयमते जोरे जाके रहे भव थोरे हैं॥
चढे ज्ञान घोरे शिव साधवे को दोरे राग द्वेषादि अगोरे जानी ताके मन मोरे है।
अमीरिख बाहिर भीतर रंग घोरे ऐसे साधु गुण गोरे ताको हाथ हम जोरे हैं॥
संयम सुधारे पंच महाव्रत धारे सो निवारे सब पातक प्रचंड पुंज भारे को।
आश्रव विदारे सत्य संयम आचार धारे, तत्त्वको विचारे सींचे समताके क्यारेको॥
ज्ञानके उजारे रागद्वेष हूसे न्यारे, विषै वेल को उखारी पामे भवके किनारे को।
कहे अमीरिख अघ पुंजको विदारे जाणे, ऐसे गुण धारे सोही तारेगा हमारेको॥

चरण सित्तरी—

पंचमहाव्रत शुद्ध भाव से आराधे नित्य, क्षमादिक दशविध यति धर्मधारी है।
वैयावृत्य-भेद दश संयम सतरे विध, नववाड सहित विशुद्ध ब्रह्मचारी है॥

पंच परमेष्ठि के १०८ गुण—

अरिहंत देव बारे गुण से विराजमान, अष्ट गुण सिद्ध कर्म रिपु किया छारो है।
आचारज प्रभु गुण छत्तीस महान जान, उपाध्याय स्वामि गुण पचीस उचारी है॥
गुण सत्तावीस धारी साधु महा उपकारी, एक शत आठ पच पद गुण सारी है।
मन वच काया शुद्ध, जपिये त्रिकाल नाम, कहे अमीरिख नित्य वदना हमारी है॥

ज्ञान क्रिया के विना मुक्ति का अभाव—

केते सिर पैर लों मुंडावे केश वारंवार केते पच केशी नख जटाही बढावे है।
केते रहे दिगवर वसन तजि फिरे केते, नाना रंग भेख केते भसमी रमावे है॥
केते जोग आसन समाधि गही बैठे केते पचाग्नि चौरासी मांही देहको तपावे है।
अमीरिख करी क्योंना देखो कष्ट नाना भात, जीव दया ज्ञान विना मोक्ष नहीं पावे है

संतोष-धन महिमा—

पुण्य जोग पामे धन, रजत कनक खान, पोरस रसान वर रतन निधान है।
हीरा नील विद्रुम गोमेध पुखराज पन्ना, माणिक लसन मोती, पारस पाषाण है॥
भूमि गृह भूषण वसन यान भाजन आयुध सेना, त्रिया पशु गजादि महान है।
कहे अमीरिख जब आवत संतोष धन, ताके ढिग सब धन, धूलके समान है॥

धर्मोपदेश--

जो लौं यह देह तेरी वृद्ध नाहीं होय तोलौं तप जप उद्यम सुक्रिया उर धरि ले ।
जो लौं ना नाभांति रोग ग्रसे नाशरीर तेरो,तो लौं जिनराज यश,भावसे उच्चरिले ।
जो लौं पच इन्द्रिय सुबल नहीं क्षीण होय, तोलौं नर सुकृत-रतन कोप भरि ले ।
कहे अमोरिख जो लौं कालरिपु घेरे नाहीं, तो लौं तू धरमकी कमाई खूब करि ले ॥

भावनग परीक्षा करण शिक्षा—

शयम सुहीरा नील नियम विद्रुम व्रत, गोमेध विराग ज्ञान मानिक हरखि ले ।
तप जप मोती ध्यान पन्ना नय लसनिया अभय सुदान पुखराज ही निरखि ले ॥
कहे अमोरिख दु ख दारिद्र पलाय ऐसो समकि पदारथ अमोल पास रखि ले ।
पूरण भरी है जिन धरम मजूस यह, ऐरे जीव जौहरी, जवाहिर परखि ले ॥३२॥

समय सफलता--

सुनहु सुजान प्यारे पायके समय सार, भूलि हूँ न ऐसो कहूँ औसर विताइए ।
परम पुनीत जिनमत सुखधाम लही, हरख सहित ज्ञान नद में नहाइए ॥
सार जिनवाणी सुखदानी हितकारी मानो जानी निजरूप पर सग विसराइए ।
तिरनेको दाव नाव सफरी समान यह, कहे अमीरिख परे पुण्य जोग पाइए ॥३३

रचयिता —शास्त्र-विशारद प्रौढ कवि श्री अमीऋषिजी म०

ऐ रे मन मेरे तू भयो मलिन मदमति, अति मतवारो तोही, रंचहू न चेत है।
भयो है पलग अघचारी अनाचारी चोर, पचिके करम भयो पातक निकेत है॥
सीख या हमारी हितधारी सुखकारी मान, अमीरिख कहे तोही भारी मुग्ध नेत है।
त्यागी अभिमान सुधरम आगेवान होहु, रतन अमोल क्यों वृथा हा खोय देत है॥

नूर ना रहेगो यो गरूर ना रहेगो मगरूर ना रहेगो देह धूरमें मिलायगो।
धन ना रहेगो ना रहेगो तन नीकापन, जीवन ये तेरो छिन एकमें बिलायगो।
करले भलाई भाई छोडो छल छद मद, जन मिल देह तेरी, आगमें जलायगो॥
कहे अमीरिख चल्यो जायगो अकेला तब, तेरे हितकारी कोउ संग ना चलायगो।

सुनरे सयाने तू करत क्यों गरूर एतो, कहे के अभिमानी हित वेण नहीं धारे है।
नीकापन यह तेरो छिनमें विनशी जाय, थिर ना रहेगा साज बाज ये निहारे है॥
देखतही तेरे कते धूर में मिल है जन, अजहूँ ना नेक अभिमान को उतारे है।
कहे अमीरिख धारिक विनय मूल हाहु, छोडो दे गरूर गुरुदेव यों उचारे है॥३९

अब क्यों भयो रे मतिमंद घरबध ही में, तोहे अभिमानी तोहो केतो समझायो है।
सद्गुरु तोही जिनवेण को सुनावे पिण, करमके भारी ना विवेक उर आयो है॥
धरम न भावत न गावत जिनराज गुण, दुष्कृत कमाय शिर पातक चढायो है।
ओसरको पाई अब कर ले भलाई भाई, नीको अमीरिख उपदेश दरसायो है॥४०॥

वसन विहीन नाच नाचिके रिझाय तिन्हे, सबे भांति ताके व्हे अधिक उरमाने है।
कहे अमीरिख समरत्थ मनमत्थ हत्थ, मन वच तन होय विवश विकाने है ॥४४॥

अंध के २३ प्रकार--

प्रथम लोचन अंध, क्रोध मान माया अंध लोभ अंध भय अंध, रागद्वेष अंध है।
मोह अंध धन अंध जोबन के जोर अंध, मद अंध चिंता अंध, अंध मतिमंद है॥
भूख अंध प्यास अंध इज्जत करज अंध, विद्या के गरुर अंध और जन्मंध है।
रात अंध दिन अंध, कहे अमीरिख तामें, सबहूसे विषय विकार अंध फंद है ॥४५

पूर्ण श्रेष्ठ विद्या का २७ जने को अभाव--

कामी क्रोधी लोभी अरु दरिद्री प्रमादी मूढ, दुखी पराधीन पक्षपाती अभिमानीको
मोह मदवंत व्यग्र चचल कृपण पुनि, रहे सोच सकूची कुसंगी औ अज्ञानी को॥
अनाचारी आलसी अभागी अनचाही नर निंदक अनोसरी अधीर अकुलानीको।
अमीरिख चित्त सुविचारो या उचारा बात, पूरी वरविद्या नहीं आवे इन प्राणीको॥

१६ रत्नों के नाम--

गोमेध रतन अंक रतन फटिक वर, लोहिताक्ष मरकत, जानो सुविचार के।
मसारग रत्न भुज मोचक सुइंद्र नील चंदन गेरिक हंस गरभ उचार के॥
पुलक रतन नाम, सोगंधिक जानो पुनि चंद्रप्रभ वेडूरय, मोल जु अपार के।
जलकांत सोलमो, सुनाम कहे अमीरिख कहे जिन रतन ये षोडश प्रकार के ॥४७

आयुष के ३६ प्रकार--

पाक रस धातु वस्त्र फरस्सु तान पान पुर्व गाव छुरा मो क्वार तीन धार ये।
रेचक संजय गाता, लोमर मुगुरवी पास अम्बु वाक सजर सेकुरा वाजु सार ये॥
यंत्र एक मुसल वाण पर वंदुक मत्स्य मंजाल करद गुप्ति गुरज कटार ये।
खास्यो फिरतोस पटा आस पढ़े अमीरिख आयुध पिछानो खट तीस को प्रकार ये॥

संसारी जीव अवस्था—

क्याहुक जीव नव पायो गज देह स्थूल, क्याहुक लघुतन कीडो क्यायो है।
क्याहुक राव होय शीस पे धरायो छत्र क्याहुक रंक होय भीख मांगने जायो है।
क्याहुक देव भयो नरक निगोद भव क्याहु विषय रत होई दुःख पायो है।
कहे अमीरिख ऐसे जीव भव धारी जीव कर्मको अनंत वार नाची ज्यों नचायो है॥

चिदानंद की मनभिन्नता--

ऐ रे चिदानंद तू अनादि से अरूपी गुण अनंत २ शक्ति सिद्ध के समाना है।
रह्यो जड़ संग सत्संग की भावीन सम निज शुद्धि भूलि गयो मूरख दिवाना है
मोह में विनस्य जग वस्तु ए हमारी सब ममता में बंध्यो ए सब क्या अपाना है।
कहे अमीरिख जड़ देह ही अप्पाणपना क्यों देख सिद्ध पर भेद का पिछाना है॥

मध्यमंगल-गणधर प्रार्थना--

आगम प्रकाश कवि नाशक भरम तम, रिद्धि सिद्धि वुद्धि सदा हाजर खरी रहे।
लब्धि के निधान वेण अमृत समान तातें, कहे अमीरिख वेल करुणा हरी रहे॥
मोपै गणराज अब, एती कृपा कीजे तब भक्ति मति मेरे चित्त हेममें जरी रहे।
टार मतिमदता निवार दे विघन मोह, दीजे वरदान हिये सुमति भरी रहे॥५१॥

स्वार्थ-कथन—

मात तात त्रिया सुत, भ्रात मित्र न्याती सबे देखतही जात पे न होत को सहाई है
सदा ही कमायो ताको खायो सो भूलायो देखो,छातही लगाते नेक लाजहू न आई है
एक छिन जाके विन नेक ना सुहातो ताको, हाथसों जराय छार वार में वहाई है।
कहे अमीरिख सुविचार के निहार जग, देहकी सगाई नहीं, श्वास की सगाई है॥

कुकवि-निंदा--

मोह माही विकल भये हैं जग जीव सबै, राग वश होय शुद्धि लाज को विसारे है।
सीखे विन सहज ही आवे अघ चाल पुनि, सेवन विषय सुघराई उर धारे है॥
तापर मलिनमति, रचे रस काव्य और, नायिकादि भेद अलंकार विस्तारे है।
कहे अमीरिख काम अध मद प्राणिनके, नेत्रमें वहोरी मूठी, धूल भरी डारे है॥

बोली से गुण दोष--

बोली से आदर और जगमें सुजस होय, बोली से सकलजन, मित्र हो रहत है।
बोली से अनेक विध भोजन मधुर मिले, बोली से सुने है गाली मार भी सहत है
बोली से सुप्यार और बोली से पैजार त्यार, बोली से कलेश कारागृह भी लहत है
कहे अमीरिख नर बोली है रतन सार, सुगुण विवेकी बोल तोल के कहत है ॥७७

पंचेंद्रिय-विषयासक्त को शिक्षा--

ऊँचे २ धाम नीके, चित्र अभिराम जाली झरोखा गवाक्ष माने सुख भरपूर है।
नाटक अनेक विध, अतर फुलेल तेल, शुद्ध गंधोदक भल, भोजन मधूर है ॥
सेज सुख आसन आभूषण वसन वर, ननलो सुन्दर आय, उभी सो हजूर है।
अमीरिख गते सुख, पायके भुलाय मत, धाम नहीं कोवे आगे मकट जरूर है ॥

सार तत्व कथन

शिवसुख साधन प्रधान जिन वेण जान, करिके पिछान ऐ सुजान धारो चित्त।
तारक है देव सोही, जामें नहीं दोष कोई, मोही गुरु काम वाम धाम चाह त्यागे वित्त
सत्य सो धरम जहा, दया पट् काय हूकी, तत्त्व ये प्रधान की श्रद्धान मन धारो मित्त।
तजिके प्रमाद शिव साधन करीजे ऐसे अमीरिख सार उपदेश यो प्रकाश्यो हित ॥

चेतन को चेतावनी—

महा मोह नींदमें अनादिकाल चिरभीर, सूतो है निशंक निज सुधि सबही विसार।
विषय कषाय रागद्वेष की प्रमाद भरा, अवम अमाप मत रोष्ठ सद अपार॥
घटमें अनंत रिद्ध राखे है हुलास खी परख न कीनी कभी ज्ञान नैन मे निहार।
कहे अमीरिख जाग त्याग मात नींद अब देख निजरूपको निवारिके मिथ्यापकार॥

संसार कारागृह—

कैसी क्यों संसारी लोक, पड़ीकत्तो आनो गृह त्रिया पगबेड़ी हत मोह के विकार है
पैराकत परिवार आला रोके नहीं भार भालस प्रमाद नीर मिथ्या अंधकार है।
मोह की धोवार गिरी काची रितपंथ भय मारो पको पड़े मानी वध हिसकार है
कहे अमीरिख अवसर नहीं बारंबार मनुष्य जनम मुक्ते मोक्षपुरी द्वार है॥१॥

काल समर्थता—

योगके अभ्यासी जप ध्यान की समाधि साथी निरुपाधि काल से भयो न कोई पंथमें
सिद्ध मुनि इंद्र सुरनाथ अनंत भूप कोविद कुलीन भर, सूझे सत ग्रंथ में॥
यंत्र मंत्र औषध उपाय किये देहधारी अमर भयो सो नाही सुन्यो वा सिद्धांतमें।
कहे अमीरिख अभ्यास करो है जग छूटी भी न छूटी जिन ऐसो सुन्ये संतमें॥

वैराग्यावस्था कथन—

जा दिनते वाणी जिनराजकी परी है कोन, ता दिनतें मेरे उर ज्ञान बोध जागो है।
लगत अनित्य धन धाम काम ठाम आदि, जगको सनेह हियरातें भूरि भागो है॥
भयो मैं वैरागी अभिलाषो ज्ञान आतमको, शिवपद साधवे मे, मेरो मन लागो है
अवतो आधीन लीन, भयो जिन धरममे, अमीरिख याते देह नेह सब त्यागो है

पापोदय में पश्चात्ताप--

पायो नर जन्म मो गमाय दियो फोकटही, कबहू सुगुरु उपदेश मन भायो ना।
खोटे देव देवीको मनायो गुण गायो पिण, दूषण विहीन जिनराज जस गायो ना
पापको उपायो पायो मिथ्यामद छायो कहे, अमीरिख मोह काम क्रोधही मिटायोना
पाप उदे आयो तबे रोय पछतायो कहे हाय मैं अभागी जैन धरम कमाया ना॥
बाल वय मात पितु, भ्रातके सनेह वश, शिशु संग हास खेल क्रीडामे बिताय दी।
यौवन विषय रस, पाये ललचाय मूढ, भयो उनमत्त गुरु शीखसु भूलाय दी॥
वृद्ध भयो अग शिथिलानो पछतानो तबे, कहे अमीरिख वय तीनो यो गमाय दी।
रतन मंजूषा सम, मिली थी मनुष्य देह, कीनो ना जतन हाय, वृथाही लुटाय दी

उपदेश—

धरम न जाण्यो सत करम न जाण्यो कछु मरम न जाण्यो मत जैन जिनवाणीको।

स्त्री-दुःख —

वीछिया झाझर और अनोठ मुंदडी बीटी, ककण झूमर भुज-बधही मगायो है ।
चद्रहार तेडयो लाव, नथ चूप दातनकू औगन्या करन फूल बिंदली सुहायो है ॥
शीशफूल टीकी लाव, रखडी जतन जडी, माथाकू मेमद हीर, चीर मन भायो है ।
कज्जल सुरमो मिस्सी, एतो तो मगाय लीनो, फेरहु कहत पिय लगर न लायो है ॥७०॥
उखल मूसल लाव, हाडी कुंडी चाटु लाव, चलनी ने सूप थाली, बुहारी मंगाई है ।
राली परयंक लाव सोड और सुई लाव, छोटे २ कटोरे, पडेरी मन भाई है ॥
रसोई करन बैठू चून दाल घृत तैल लूण मिरी गोल खाड आछो लाव राई है ।
एतो तो मगायो कहे, हींग नहीं लाई पिय, अमीरिख कहे नारी ऐसी दुःखदाई है ॥७१॥

काम-जय-गुण —

केते नर महाउन्नमत्त गज जोते पुनि, महाबलवत गही केसरी विदारे हैं ।
लाखन सुभट साथ, युद्ध करिवेको धीर केते महा ओट गढ कोट तोरो डारे हैं ॥
केते लोह शृंखलादि तोरे गिरि ढाहै ऐसे, औरहू अनेक वीरताई प्रण धारे हैं ।
कहे अमीरिख ऐसे शूरको हराये काम, ऐसे रिपुराज ताको साधु ही पछारे हैं ॥७२॥

काम-रिपु-निर्दयता —

काम बलवत लेई हाथ पचबाण ताप, वश करि लीने शूरवीर सभी मारिके ।

देवको विमान नाना भातिकी रतन राशि, पावक की झाल घृत सिंचित अमंदको।
जिनराज माय यह चवदे स्वप्न पाय, कहे अमीरिख पामी, चित्तमे आनन्दको ॥

संयम-व्रत दुष्करता--

सहज नहीं है असिधारा पै गमन पुनि, त्योंही ना सहज पावकमें तन दाहिवो।
अगुलिपै मेरु धरी राखवो सहज नाहीं, भुजानी ते स्वयभुरमण सिंधु थाहिवो ॥
देह सुकुमार अति सयम कठिन जावजीव विसराम पै न दो दिनको चाहिवो।
यातें अमीरिख सुविचार करी लीजे व्रत, सहज नहीं है मुनि मारग निवाहिवो ॥
चाबवो कठिन मेण दात हूँ ते लोहजव, कठिन प्रवाह गग सामे उर धाहिवो।
कठिन पवन पोट बाधि के उचावो शीश, कठिन सुमेरु तौल करिके बताहिवो ॥
त्योंही है कठिन महाव्रत पद यौवनमें, परीसे सहन करो, चित्त ना चलाहिवो।
यातें अमीरिख सुविचार करो लीजे व्रत, सहज नहीं है मुनि-मारग निवाहिवो ॥

द्यूत व्यसन निषेध--

जुवा का व्यसन जग कुजस करन सुख सपत्ति हरन शिर पातक चढावे है।
कलह दारिद्रको निकेत दु ख हेत भय आपदा को खेत शुभ क्रिया को नसावे है ॥
स्वजन कुटु ब नहीं प्रीति औ प्रतीत करे, भीति ना करमकी अनीति हो सुहावे है।
कहे अमीरिख भली सीख या हमारी मान, तजिदे जूवाका खेल, जातें सुख पावे है॥

मांस-निषेध—

मांसहीके खात कौन संगस मिलासे मोच रस बरा होय नेक दया न धरत है।
कृमि-कुल-राशि छति बास असरस गंध परम अशुचि किये ग्लानता करत है॥
माखी भिनकारे वर एकठो बासे भिन, अंध अनुचीन नर ताको आचरत है।
कहे अमीरिख दुःखमूल सबी त्यागी हेतु आमिष आहारी मरी नरक परत है। ८०।

मदिरा-निषेध—

बासित दुर्गंध रहे सड़े कीट ढेर मासे, परम अशुचि प्रिय आगस मद्यानको।
शक्ति बुद्धि शोषके विवश भूमिपात करे, वसन विहीन करे तथा है दुःख कानको॥
कहे मुख खाक माखी पुनि वमन सुमी माता बेन बेकिक भिखारी देत मानको।
कहे अमीरिख धिक् धिक् है जनम तासु ऐसो दुःख जानिक तजोरे मद्यपानको॥८१।

वेश्या-निषेध—

परधन ठगिवेको करत कला अनेक, हाव भाव हसके मीठ वचन उचारे है।
पतंगके रंग सम जनासे अनित्य प्रीति तन मन धन लूटी करत असार है।
मित मुख सब मिल आचरत अमरस ऐसी, कुटिला कुपात्र महा अशुचि आगार है।
कहे अमीरिख सभी पातकी मूल है कहे, पातुरी को संग ताको कोविद निवार है॥

शिकार-निषेध—

पीठ देइ भागत रहत मुख दीन सदा, दात तृण लेत कभी होत ना गरम है।
डोले निराधार इत उत, छिपि राखे प्राण, गरीव अजाण मिर सकट परम है॥
ऐसे वनचारिनपै गजव गुजारिवो सु, कहे अमीरिख यह निंदित करम है।
मृतक समान वन फिरत अनाथ सदा, दीन पशु मारिवो न त्रत्रीको धरम है।।८३।
वेद औ पुराण वाची, सुनिके विचार करे, ईश्वर रचो है सृष्टि पत्त दढ धारे है।
प्रभु के वनाये पशु पत्ती आदि जीव सव,ताको मारी डारे हिय न्याय ना विचारे है।
कुम्भकार पात्र कोउ फोरे तो दिरावे दड, आप सजावार भये ताको ना निहारे है।
कहे अमारिख कम न्यायतें विरुद्ध देखो त्त्री पद पायके गरीव जीव मारे है॥

चोरी निषेध—

चोर चित्त चिंत चौक वसी ही रहत भीत परधन देखि के हरण चित्त चहे है।
मालधनी देखी होय कुपित पीटत महा मारे शस्त्र घाव घन, वध दुःख लहे है॥
नृप कोप तोपसे आरोप के हरे है प्राण, मरिके सीधावे यम लोक दुःख सहे है।
कहे अमीरिख दुःखदाता है व्यसन यातें, समझि विवेकी त्यागो ज्ञान उर गहे है॥

परस्त्री गमन निषेध—

परत्रिय सग किये हारे कुल कान दाम, नाम धाम धरम आचार दे विसार के।

चोरीमें कुजस नहीं करे परतीत कोउ प्रजापाल करि यों मिटावे मान पारि के।
पातक है भारो दु:खकारी भवकारो नर कुगति सीधावे वश होय परनारि के।
यातें भमोरिख पारे, रिपख विरुद्ध चित छओ कुव्यसन हित-सार उर धारिके॥

एक २ व्यसनतें नष्ट भये —

जुआ खेली पाण्डव गमाया राज साज सब मांस भखो बक राय नरक सिधायो है
मदिरा प्रसंग सब यादव को नाश भयो वेश्या संग धम्मिल कुमार मेह गयो है॥
मारवे तें ब्रह्मदत्त, सत्वघोष व ब्रह्म परदारा संग सुआरौष दु:ख पायो है।
यो भमोरिख धन कुमति पर है मातें व्यसन तजन उपदेश दरसायो है।।८७।।

अनित्य भावना—

मात पिता नारी सुत भ्रात परिवार सब, सेना गज कोट पुर भूमिगत माया है।
भरित पवित्र देस भगिनि अखिल पट भूषण अनेक विधि जिसको निपाया है॥
जे ये सब कृत्रिम सो अवश्य विनशि जाय अथिर अनित्य जिन-वेण दरसाया है
यो भमोरिख यों विचार के भरत भजी रिद्ध जहां केवल पद पाया है।।८८।।

अशरण भावना—

अशुभ असाता सबै आवे सब आनके, मित्र परिवार कोऊ, होत ना सहाई है।
सब देवनाग वश जाके विशाल भये शिशु लाख धारी धावे फिरत दुहाई है॥

शरण सहाई जिनराजको धरम एक, त्यागिके भरम उर धारो सुखदाई है।
कहे अमीरिख भाई भावना अनाथी तप संयम कमाई भव भ्रमण मिटाई है ॥८९॥

संसार-भावना —
चारु गति माहे जीव, भम्यो है अनादि काल, तहाँ उच नीच भव, नाना रूप धारे हैं।
करम आधीन दीन संकट सहे हैं त्योंही, जनम मरण जरा व्याधि दुःख न्यारे हैं ॥
पुद्गल परिवरतन जू अनंत किये एक जिनमत भव वामते निकारे हैं।
या विध विचार पाये शालिभद्र देवगति, अमीरिख धन्ना मुनि मोक्षमें पधारे हैं ॥९०॥

एकत्व भावना—
आवे जीव एकलो सिधावे फिर एकलोही, भ्रमे जगमाहो न सहाई कोन और है।
सपने के भागा परिवार जीव सहे आप, सुख दुःख शुभाशुभ संचितके जोर है।
दुष्कृत प्रताप आप कष्ट कुगतिके सहे, सुकृत कमाय करे ऊरध को गौर है।
कहे अमीरिख नमि,-राय यों विचारी चित्त, करम हटाय रिख पाये शिव ठोर है॥९१॥

अन्यत्व भावना—
चिदानन्द भिन्न पुद्गलसे स्वरूप तेरो अमल अमित-ज्योति भानु के समान है।
अनंत चतुष्टय विराजे घटमाहो यातें, सिद्ध सम आतम अपार ऋद्धिवान है ॥
भरमतें भूलिके स्वरूप जड संग राचो, करम कमाय सहे संकट समान है।
यातें मृगापुत्र निजरूप में मगन भये, कहे अमीरिख पद, पाये निरवाण है ॥९२॥

निजरा भावना--

निरजरा परम प्रधान जिनशासन में, शिवसुख दाता यही जिनजी वखानी है।
जनम मरण गद औषधी अनूप अघपक नीर भव तरु छेदन कृपानी है॥
करम हटावन कटावन जगत वध, दु:ख की घटावन आनन्द की निशानी है।
कहे अमोरिख अरजुनरिख धारी तप निरजरा करी आप भये निरवानी है॥६३

लोकाकार भावना--

लोकाकार हिये में विचारो शिवचाहो जन, नीचे है नरक सात, दश भौनवासी है।
मध्यलोक व्यंतर मनुष्य तिरयंच पुनि, ज्योतिषी असंख्य द्वीप सागर प्रकाशी है॥
ऊरध कलप अहमिंद्र अनुत्तर देव, सिद्ध शिला पे वसे, सिद्ध अविनाशी है।
कहे अमीरिख यों सेलकराय रिषि ध्याय, भये शिववासी भवकाटी भवफासी है॥

बोधि बीज भावना--

पामिवो सुलभ जग, पुद्गल जनित सुख, दुरलभ एक बोधिबीज समकित है।
याके विन किया सब, अंक विन शून्य सम, छार पर लीपन ज्यों जानिये अहित है
ये ही भव वासते निकासी शिव वासी करे, हरे दु:ख दोष भरे कोश निज नित्त है
भाई शुद्ध भावना यों, ऋषभजिनंद नंद, पाये अमीरिख शिव संपत्ति अमित है॥

धर्म भावना—

जग में अनेक भांति धरम बताते जन, जाने ना धरम कौन सत्यमत सार है।
ज्ञान ओमरूपा मूल साचो मनुकूल लखि धारो निज हेरे यह निराधार है॥
पाऊ बिन भम्यो भव चक्र में अनादि जीव यही शिवपुर सुख संपति दातार है।
यह अमीरिख मस्तेषोधी परमरुचि भावना भाराधी यह पाप भवपार है॥११

समुच्चय १२ भावना—

जग है अनित्य यहीं शरण संसार माही भ्रमत अकेलो जीव अब शेष भिन्न है।
परम अशुचि काली देह लखी आस्रव संवर निर्जरा हो तें लाभ भय छिन्न है॥
निरतम विचारी लोकाकार बोधबीज सार, सम्यक धरम कर धारो निशदिन है।
कहे अमीरिख भारे भावना को भाव कर धारे विलक्षण घन ताके धन धन है॥

तीन मनोरथ—

कब कुमत शला यह भारत तजूंगो दूर कब धन धामसेती ममत मिटाऊंगो।
कब विप तुल्य जानी त्यागूंगो विषयराग, कब मैं कषाय जीती ज्ञान उर लाऊंगो
कब सो प्रमाद मत जोरिके करूंगो धम स्थिर परिणाम करी भावना सो भाऊंगो
कहे अमीरिख मनोरथ को चितारे नित धन्य वह दिन कभी सफल कहाऊंगो॥

卐卐卐 रचयिता—शास्त्र-विशारद प्रौढ कवि श्री अमीऋषिजी म 卐卐卐

कब दुःख-मोह त्यागी जगको सनेह उर, धारिके विराग जीतो सेना काम अरिकी
महाव्रत धारी पाप आश्रव विदारी कब, होय जितेंद्रिय रोकूं गति मन हरि की ॥
कबहो करूंगो तप सहूँ परीसह दल, अनुभो अभ्यासी मेटु भीति भव दरी की।
कहे अमोरिख कब संयमी बनूंगो शुद्ध, चिंते भवि धन्य बलिहारी वह घरी की ॥
कब यह देहको अपावन अनित्य लखी सब भांति यातें मोह ममत उतारूंगो।
होयके निःशल्य चारो आहार तजूंगो उर उज्ज्वल समाधि साधी,पातक विदारूंगो
थिर परिणाम करी ध्याऊँगो स्वरूप निज, शत्रु मित्र दोउ एक, दृष्टितें निहारूंगो।
कब वह दिन घरी आवेगी हमारो धन्य, कहे अमोरिख निज आतम सुधारूंगो ॥
मोक्ष अभिलाषी समदृष्टि जो विशुद्ध चित्त, चिंते मनोरथ मेटी मनकी मलिनता।
शक्ति अनुसार करे क्रिया रोको आश्रवको, तजी रोष राचे निजगुणमें प्रवीणता ॥
पंकज समान जग भोगतें अलिप्त रह, तत्रै महालाभ होय, धरम को वीनता।
कहे अमीरिख काज ताके होय भवियाम, शिव-धाम पामे सवै कर्म करी क्षीणता

गुरु-प्रशस्ति—

स्याद्वाद मत में प्रसिद्ध जैन चक्री सम भये रिख लवजो सुभग प्रगटायो है
ताके शिष्य सोमजी ता शिष्य रिख कानजी के, नाम संप्रदायमें सुजस सरसायो है ॥
ताके अनुगामी घने कोविद भये हैं पूज्य, सुखारिख स्वामी मत पाखंड हटायो है।
ताके पद कंजको मिलिंद अमीरिख आज, भव्य प्रतिबोधवेको ग्रंथ यो बनायो है।

मय गुरु ध्यान पत्र वर्द्धमान संवत्में(१४८७) मासन सौभाग्यपुर कीनो प्रतिबोधको
माणिक पूरण शशी पंचके स्युप हर शासना मगठ मयो पाप ताप रोष यो ॥
किंचित् जिनआज्ञाके विरुद्ध पद भाखनकोन्यूनाधिक जानो सारी गुणी कीजो शोधको
वहे यतीश्वर गुरुदेव की कृपासे आज पूरण कियो है ग्रन्थ शतकसुबोध यो ॥१०१

पद्धरी छन्द –

इक शत पद् मान कवित भेद, शोधक पतु पद्धरी छन्द करो।
इह ग्रन्थ सुबोध कीनो प्रकाश पूरण पीयूष मन मगन भारा ॥१०२॥

॥ इति सुबोध शतक सम्पूर्ण ॥

॥ शुभम् ।

विविध-बोध बावनी

॥ सोरठा ॥ शासनपति जिनवीर, धीर वीर वंदो सदा ॥
मेट सकल भव-पीर, दीजे अविचल संपदा ॥ १ ॥
सकल पदारथ जान, तीन लोक त्रिकाल के ॥
अविचल केवल भान, उदय करम-तम टालिके ॥ २ ॥
प्रगट करी जगनाथ, जिनवाणी मन भावना ॥
तिनको हृदय वसाय, कहूँ बोध हित बावनी ॥ ३ ॥
सुनो भविक हित वैन, नैन ज्ञानके खोलिके ॥
पावोगे चित्त चैन, बोल हृदय में तोलि के ॥ ४ ॥
विविध बोध इह माय, समय पाय वर्णन करे ॥
अमृत सम सुखदाय, सुनत हो उर आनन्द भरे ॥ ५ ॥

॥ सवैया तेवीसा ॥

॥ ॐ ॥ ॐ शुभ अक्षर सार सुजाण, पिछान गुरुगम ज्ञान लहो है।
पूरव आगम को यही सार सु दूसरो या सम मन्त्र नहीं है ॥
गर्भित है पद पंच अनुपम, सिद्ध त्रिलोक स्वरूप यही है।
अमृत कारज सिद्ध करे सब, या विध श्रीगुरुदेव कही है ॥ १ ॥

||अ०|| अपने सम जाण ज्यु जीव सभी सुख चाह करे दु ख से डरते ।
जिम कटक आय चुभे तनके अति व्याकुल हो दु,खको भरते ॥
तिम मानि सुजान गरीव के प्राण प्रवीण अनीति नहीं करते ।
करुणामय धर्म अमीरिख धारत सो भव सागर से तरते ॥ ६ ॥

||आ|| आयु असार विचार हिए थिर अजुलाको नहीं रेवत पानी ।
देह उदारिक नाश हुवे निज मानि ममत्व करे अभिमानी ॥
काल वली शिर छाय रह्यो थित पूरि भये लहि जावत तानी ।
सुकृत साध आराध सुधर्म अमीरिख मर्म पिछान सुज्ञानी ॥ ७ ॥

||इ०|| इद्र नरंद्र नमे रवि चद्र करे नरदेन सुसेव घने है ।
केवल ज्ञान रु दर्शन तें सव लोक अलोक के भाव भने है ॥
देत वताय सुमारगको अवलवी भवी भव भीत हने है ।
नाथ अनाथन के जिनदेव अमीरिख सेवत काज वने है ॥ ८ ॥

||ई०|| इष्ट अतिष्ट को जोग वने तव हर्ष विपाद नहीं चित्त आने ।
स्व पर रूप को वोध जग्यो पंच द्रव्य से भिन्न निजातम जाने ॥
धाय समान कुटुम्व को पालत कर्म के वन्धन को डर माने ।
सम्यक् दृष्टि करे शिव साधन अमृत यो जिन वैन वखाने ॥ ९ ॥

॥लृ०॥ लहिये शिवसुख अनत भवी चित्त धारत शीख सदा गुरु की।
सटद्रव्य पदारथ भेद भला कहे राह सदा अमरापुर की॥
परमाद कपाय विकार तजो यह औपध सार मिथ्या ज्वर की।
भवि जीव अमीरिख होय तिन्हें यह लागत ज्ञान तणी मुरकी॥१४॥

॥लॄ०॥ लीन परिग्रह आरभ माही जिनागमपै चित्त नाही दियो है।
कूड प्रपच कपाय करी ठगि के पर द्रव्य को छीन लियो है॥
राग रु द्वेष प्रमाद में राचि विषय वश विकल होय रयो है।
मानव जन्म अमीरिख पायके सार पदारथ ख्वार कियो है॥१५॥

॥ए०॥ एकन के घर पुत्र भयो तहा आनन्द मगल रंग बधाई।
रोग वियोग भयो घर एकके रोय विलाप करे मुरझाई॥
जां घर भानु उदे शुभ उत्सव साझ समे तहा सोग सुनाई।
केत अमीरिख या जगकी गति, जानिके भूल रह्यो किम भाई॥१६॥

॥ऐ०॥ ऐ मन मूढ लह्यो भव मानव नाही निजातम काज कियो अव।
रात्रि रह्यो अति पातक मे मय मौतहुको न धरयो चित्त में कब॥
काल वली गहि लीन अचानक एक न दाव उपाव चल्यो तब।
कोउ न साग-भयो जियके धन धान कुटुम्ब धरयो रहियो सब॥१७॥

||क०|| काम अज्ञान भयादिक दूषण जामें! न पावत मूल में कोई ।
केवल दर्शन ज्ञान करी जिन द्रव्य स्वरूप रह्या सब जोई ॥
इन्द्र नरेन्द्र नमे सुरवृन्द जपे भवि सुख लहे अघ खोई ।
अमृत देव घणे जगमें पण तारक देव कहावत सोई ॥२२॥

||ख०|| खट् कायके जीव न जानत है शिव साधन को बहु कष्ट करे है ।
धरि ऊर्ध्वबाहु अधोमुख झूलत ताप, हुताशन नेह जरे है ॥
अनगालित नीर से स्नान करे, फल फूल सताय के पेट भरे है ।
करुणा बिन कष्ट अनेक करे रिख अमृत काज कछू न सरे है ॥२३॥

||ग०|| गिने वनितादिक बधन से पुनि काम विकार लखे जिम नाग ।
अनित्य अपावन देह लखे कबहू नहीं नेक धरे अनुराग ॥
गिने दु:खदायक सुख सभी धन धान ममत्व हरे करि त्याग ।
रहे निर्लेप सरोज यथा नर जान अमीरिख सत्य विराग ॥२४॥

||घ०|| घूमत देश विदेश वृथा धन काज अकाज करे विध नाना ।
कष्ट सहे न लहे टुक चैन न खाय कमाय धरे लहि छाना ॥
पुण्य लसे विलसे धन अन्य पै तो सग नाहीं चले एक दाना ।
धार सतोष तजी तिसना हित सीख अमीरिख मान सयाना ॥२५॥

॥२०॥ नावत जो भव सागर जु अनादितैं मोह महीप अधीना।
चौगति मांझ चौरासी भम्यो धरिके बहु स्वांगके वेश नवीना॥
यों सुगते सुख दुःख घने अबलौं न लखे दुख चैन न सोना।
केवल अमीरिख भव चिदानंद देख निजातम रूप प्रवीना॥२६॥

॥छ॥ चार विधे परसे जिम हेम निपक्ष-छेदन तापन कीजे।
साधन बीचे करे विधुध जिम धर्म परीक्षण चित्त दीजे॥
ज्ञान आचार तथा तपस्या गुण और दया रसमें चित्त भीजे।
कस अमीरिख राख विवेक सजी अपनेक सदा सुख लीजे॥२७॥

॥छ॥ छोड परिग्रह आरम्भ को गुरु सील सदा चित्त लागत प्यारी।
पंच महाव्रत शुद्ध धरे समिति गुपति दृढ है ब्रह्मचारी॥
आगम वेश लखे अनुसार जिम उपम चाह निवारी।
काम विकार तजे रिख अमृत ज्ञान सदा निजधर्म अधिकारी॥२८॥

॥छ॥ जे जिनधर्म सुराग भरे वर जीवदया सुख झूठ न बोले।
जे तृण मात्र न लेवे अदत्त देखि त्रिया न कछु चित्त डोले॥
बाह्य अभ्यन्तर त्याग परिग्रह मान अनंग विषे विष तोले।
दुस्तर ध्यान क्षमा तप मांय अमीरिख धर्म यही अनमोले॥२९॥

॥झ०॥ झूठी सगाई ससार की चेतन स्वारथिये परिवार मिले हैं।
स्वारथ होय आधीन रहे सब प्रीति भरे कहे वेन भले हैं॥
जो नहीं स्वारथ सिद्ध हुवे वनजारेके वैल ज्यों छाडि चले हैं।
आतम कारज सार अमीरिख ज्यों भव के सब दु:ख टले हैं ॥३०।

॥ञ०॥ या जिन धर्म विना गति जीवकी काह मई नहीं जाय उचारी।
राची रह्यो मन पुद्गलमें प्रीति छाय रही घट भम अपारी।
यद्यपि श्री गुरुके उपदेश-रवि किरणा न करे उजियारी।
तदपि सूझा करे न कभू शिव पथ पीयूष कहे सुविचारी ॥३१॥

॥ट०॥ टेरत संत प्रवीण गुणी सब मग सबे हितको उचरे है।
ये जग भोग असार लखी तजिके उर ज्ञान वैराग्य धरे है॥
शील संतोष क्षमा करुणा तप धीरज धार प्रमाद हरे है।
धारत धर्म अमीरिख याविध को शिव जात पलो पकरे है? ॥३२॥

॥ठ०॥ ठग वेश विवेक विना करि के शठ मूरख लोकन को भरमावे।
कोई यन्त्र दिखाय सिखावत मन्त्र स्वरोंके मिलाय के भाव बतावे॥
ज्योतिष औषध सिद्ध रसायन भूमि निधान कही ललचावे।
करि अमृत यो परपच मृषा नर जन्म पदारथ व्यर्थ गमावे ॥३३॥

॥थ०॥ थावर जगम जीवन को सुख वहाभ दुःख अनिष्ट लगे है।
प्राण को घात महा दुःखदायक मूढ़ मति हित मान पगे है॥
नर्क निगोद भमे मरि हिंसक तत्त्व विवेक हिये न जगे है।
धर्म के साधक जीव अमीरिख ऐसे अकाज में दूर भगे है॥३८॥

॥द०॥ देत है औरन को उपदेश न आप हिये कछु वैरा जगे है।
हेतु दृष्टान्त अनेक मिलाय रिझाय के लोक अनीत पगे है॥
अर्थ मरोरी करे विपरीत खुशामदी द्रव्य के लोभ लगे है।
पाथी के बैंगन ओर है अमृत यानिध मूरख, लोग ठगे है॥३९॥

॥ध०॥ धन धान तजे गृह छोरि भजे जिनराज के नाम लग्यो मन है।
सुध सम्यग् ज्ञान विराग रु औ न करे परमाद इको छिन है॥
निश वासर दुष्कर धारत कष्ट अनित्य लखे सगरो तन है।
जिन आन अमीरिख शीस धरे धन है धन है, धन है धन है॥४०॥

॥न०॥ नाद सुनी मृग प्राण गये लखि दीपशिखा शलभादि जरे है।
गंधतें लीन मिलिंद गम्यो तन व्है रसनावश मीन मरे है॥
स्त्री स्पर्श विषे गज प्राण गये एक एक अधीन व्है दुःख भरे है।
जो भये पच विषय अनुरक्त अमीरिख ता गति को उचरे है॥४१॥

।म०॥ मोक्ष -मिले नहीं गायन से शिव नाही मिले तन भस्म रमाये ।
छाडिके गेह वसे वनमें नहीं मोक्ष मिले बक ध्यान लगाये ।
चारहु धाम भ्रमे न मिले शिव नाही मिले मुख मोन रहाये ।
कद भखे न मिले शिव अमृत मोक्ष मिले मनको वश लाये । ४६।

॥य०॥ यह पोय दयामय धर्म सुजान अजान हुई पर प्राण हरे क्यो ? ।
नर देह से नेह करे निशवासर दौलत देख गुमान धरे क्यों ? ॥
मद मोह ममत्व कषाय विकार प्रमाद वशे अघ खान भरे क्यों ? ।
इम केत पीयूष पीयूष तजी धरि हूँस विषै विष पान करे क्यो ? ॥४७॥

।र०॥ राग रु द्वेष नहीं पक्षपात सभी जग जीवन को सुखदानी ।
युद्ध सिंगार न हास्य कथा विषयादिक को उपदेश ना जानी ॥
शान्त विराग दया रस पूरण नाही विरुद्ध परस्पर ठानी ।
ओलख अमृत या जग मे सव से अति उत्तम है जिनवानी ॥४८।

॥ल०॥ लाल सिरे मुख लाज गई चित्त लोभ वध्यो ललना विमुखी है ।
लीलरी देह पडे लादि लाकड़ी लोक हँसे लडे होय दु खी है ॥
स्वास रु खास ग्रस्यो तन धूजत चेत नहीं परिवार रुखा है ।
वृद्धपणे माही कष्ट वने रिख अमृत श्री जिनराज सुखी है ॥४९॥

॥श्री॥ श्री जिन शासन है अघनाशन ज्ञान प्रकाश तमे तर भार।
छोरि मिथ्यात्व कुमत अनादि निवारण रूप बखो सुविचार॥
आगम तीन सिद्धान्त गहा वर परम ज्ञान चरित्र उदार।
बैठ धर्म जहाज अमीरिख होय सुखे भवसागर पार।४८।

॥ हरिगीता छन्द ॥

निधि पक्ष सिद्ध पक्ष अयन संवत (२४५६) वर्द्धमान जिनेश के।
सम्वत् रची पूरण विध यह छन्द हित उपदेश के।
पद वर्ण चोखो अधिक देखो मिहिर क्षमि सुधारियो।
मिच्छामि दुक्कड होय मुझ जिन वचन अनमिल जो कहा।४९।
समुदाय मायक पूज्यश्री तिल कराची जस विस्तरयो।
श्री सुखारिखजी गुरु मुनि उपकार मुझ ऊपर करयो॥
तस चरण रज किंकर अमीरिख ज्ञान-मति सुखसावनी।
भवि-जीव हित कारण रची यह विविध-बोध सुपावनी॥५०।

सोरठा

जय जय श्री अरिहन्त सिद्ध साधु जिन धर्म पद॥
जिनवाणी जयवन्त, मंगल उत्तम शरण शुभ॥५१॥

॥ इति विविध-बोध बावनी संपूर्ण॥

चौरासी उपमा युक्त मुनि गुण बत्तीसी

|| दोहा || श्री वर्द्धमान जिनेश्वरु निजग तारण देव ||
मन-वच काये भावसु, ध्यान धरू नितमेव | १ ||
अनुयोग द्वारमे, सामायिक चउभेद ||
भाखो दीनदयालजी, सुणजो धरी उमेद || २ ||
समकित सामायिक प्रथम, दूजी श्रुत पहिचाण ||
देश व्रती तीजी कही, सर्वव्रती गुणठाण || ३ ||

चार सामायिक-लक्षण—

साचा देव गुरु धर्म तीन तत्त्व शुद्ध भाव, सद्दहणा रूप सामायिक समकित है ।
नव तत्त्वादिक ज्ञानरूप श्रुत समभाव, देशव्रती किंचित सावद्यसे विरत है ।।
सरव सावद्य जोग त्यागके श्रमण भये, साधु सर्व व्रती सर्वदामे भयभीत है ।
सर्वव्रतीको कही उपमा दुवादस जिन, अमोरिख कहे धारता होय जग जीत है ॥१॥

दोहा—

उपमा दोय प्रकार है, देश सर्व परकार । देशथकी इहा वर्णवू , साभलजो चित्त धार ॥

पर्वत की उपमा--

जैसे गिरि नाना भांति ओषध सहित होय, तैसे खीरास्रवादिक लब्धिधारी संत है ।
डुंगर ज्यों वाय करो होवे न चलित कदा, तैसे आया परीसह अचल सहत हैं ॥
जैसे नग जंतुको आधार भूत होय तैसे, संतजन षटकाया जीवन के मित हैं ।
जैसे गिरिवर सेती निकले नदी प्रवाह, तैसे नगादिक ज्ञान सरिता चलत है ॥४॥
जैसे गिरि मेरु सब डुंगर से ऊँचो तैसे, मुनि नग लोक मांहि उत्तम कहत हैं ।
जैसे नगराज मणि रतन से भरया तैसे, ज्ञानादिक रतन से भरे गुणवन्त हैं ॥
जैसे परवत महासुन्दर शोभित होय तैसे अणगार ज्ञान गुण से दीपन्त हैं ।
अमीरिख कहे नित्य धार भजन प्राणी लोग, ऐसे गुणवन्त नम्या होय दुःख अन्त हैं ॥

अग्नि की उपमा--

अगनि ज्यों ईंधन से होय न तृपत कदा, मुनि सूत्र भणतां न तृपत लगार है ।
जैसे आग प्रज्वलित होय तीव्र तेजवन्त, संत तप गुण करी दीपत अपार है ॥
जैसे तेउकायादिक बालत है तैसे भिक्षु, तप आग कर्म काष्ठ बाली करे छार है ।
जैसे आग उद्योत करत तैसे अनगार, धरम उद्योत करे टाले अंधकार है ॥७॥
जैसे अग्नि धातुन के मैल को हरत तैसे, जग जीव घट मिथ्या मैल हेत हार है ।
जलण ज्यों धातु धूल दोउको करत भिन्न, तैसे भिन्न करे जीव कर्मको विकार है ॥

गगन ज्यों अति वरसात हुए भींजे नहीं, तैसे कोधा कीरति न भींजे चित्त अंम है
अरूपी आकाश नहीं छेदन भेदन होय, तैसे निज ज्ञान को न होवत विध्वंस है ॥
नभको न अंत तैसे संत के अनंत गुण, पावे नहीं पार करे सुगुरु प्रशंस है।
अमोरिख कहे प्राणी मन भाव शुद्ध आणी, कीजे ताकी सेव दूर होय कर्म वस है॥

६
वृक्ष की उपमा—

जैसे तरु शीततापसहे पर छांह करे, संत परीसह सहे करे अन्य छाय है।
जैसे वृक्ष सेवन से मिलत है फल सार, तैसे संत सेव किये ज्ञान फल पाय है॥
जैसे तरुवर बहु पक्षीको आधारभूत तैसे जग जीव को आधार भूत थाय है।
जैसे कोइ फरसी से वृक्ष नहीं रोप धरे तैसे वध किये संत रोप नहीं लाय है॥१३
छेदे कोइ फरसी से वृक्ष नहीं रोप धरे तैसे वध किये संत रोप नहीं लाय है॥१३
चदनादि लेन किया तरु न संतुष्ट होय, तैसे किये लेपन संतुष्ट न कहाय है।
तरु फल देई नहीं मागत है दाम कछु, संत ज्ञान देई लोभ नहीं चित्त चाय है॥
वेल मे वींटाणो तरु सूखत न छांडे नेह, तैसे धर्म प्रीति नहीं तजे प्राण जाय है।
अमीरिख कहे ऐसे संत गुणवन्त नित, कीजे तासी सेव मिले मोक्ष सुखदाय है॥

७
भ्रमर की उपमा—

भ्रमर ज्यों पुष्प रस पीए नहीं देवे पीड, तैसे ग्रहे आर देवे खेद न दातार को।
जैसे अलि है मकरंद न स्नेह धरे, तैसे संत दातासु न धरे चित्त प्यार को॥

जाजम पल्लव नित रहत है निरमल मनि धर्म-सुगन्धसु उजास करत है।
धर्मीरिद्ध करे वेसे संघ का विकास भाक ध्यानरूप भाग धर्म वनको रहत है॥

सूर्य की उपमा—
जैसे रवि करत प्रकाश तैसे संतजन जीवादिक भाव को प्रकाशे यथार्थ है।
दिनकर देख होय प्रफुल्ल कमल वन तैसे मुनि दरश भवि चित्त हरषात है॥
भानु के प्रकाश ग्रहादिक ज्योति मंद होय मुनि भये प्रगट पाखंड दब जात है।
उगे भये सूरज करत अंधकार दूर तैसे गुणवंत दूर टालत मिथ्यात है॥२८॥
दिवाकर देख ज्यों दीपत का नत्तमान तैसे मुनि ज्ञान गुण तेजसु दिपात है।
भगति की ज्योति मंद होयत दिनेश उगे मुनि आय मिथ्यामति मान असपात्र है॥
मजुनिन [illegible] ज्योति होय भानु तेज तैसे मुनिराज ज्ञानादिक गुण सात है।
धर्मीरत्त [illegible] मुनि टालत करम रज निज गुण प्रगटाय हाय जगत्रात है॥२९

पवन की उपमा—
सर्व ठाम व्यापत पवन न स्खलित होय मुनि सर्व ठाम ग्राम नगर विहारी है।
वायु ज्यों रहत निरन्तर प्रतिबन्ध बिना तैसे मुनि तजे प्रतिबन्ध गुणधारी है॥
लघुभूत होय वाय तैसे गुणवंत संत, द्रव्य उपधि से मान रागद्वेष वारी है।
वायु जैसे घर करी रहे नहीं एक ठाम तैसे घर करी नहीं रहे समतारी है॥३०

मोहे क्षमा पूरण टारत है क्रपाय भेव संजम पालत स्थान भयहारा टारी है।
पाप सब करे दूर ज्यान क्षमा धार उर सममाधि सबल शाप परिहारे है ॥
बावीस परीसा शील विपत न भाव चित्त मया दूजा भंग जिनराज ध्यानधारो है
भावना पचीस भाव धारत है क्रिया दूर अमोरिख कहे ताकु वन्दना हमारो है ॥
ध्यान्न स्कमहार धारे गुणवंत मंत्र आचार स्वरूप माघ पाप मंथ धारी है।
महामोहनीय स्थान तज गात सिद्ध गुण आग ममहंत धार विमम धिपारो है।
पालत आचार वरजत दूर अनाचार तेतासीम शाप टार विशुद्ध आहारो है ॥
अमोरिख कहे दूर तजत ममत मोह समाधी त्रिसमस ताकु वन्दना हमारो है।
एसे गुणधारी उपकारी टाल करमाऊ तारे भवि जीव निज आतमको तारी है।
धीरसमे उपमा कही अनुयोग द्वारमाही ऐसे गणवंत संत हाय भविकारो है ॥
ऐसे गुण होन हाय भारक बटपकार हम्मलिंग मरे नहीं गरज सगारो है।
रसना है एक संत गुण है अनंत पार अमोरिख कहे कने क्यूं मैं उचारो है ॥२२

समत सगुणवीस एकावन साल माही मानसिर स्वामी सुवार द भारोत मे।
पीपलोदा माही मुनि गुण के बखाण किये हाल बहुधाम मपि वन्दो धार चित्तमे
जिनाज्ञा विरुद्ध होय मिच्छामिदुक्कड तस्स, भाला पुरुष तो सुधारो भावो हितमे
गुरु सुखारिखजी पसाय कहे अमोरिख गुम्फि गुण गाय सुख लहे जग भीतमे ॥

॥ इति श्री धीरसमे उपमा युक्त मुनि गुण बत्तीसी सम्पूर्ण ॥

एकल विहारी मुनि हितशिक्षा चालीसा

शार्दूल विक्रीडित——

वन्दो श्री जिन वीर धीर हितसे वाणी जिनों की सिरे।
सारंभो सपरिग्रही गृहपती नश्याय ताके फिरे॥
पासत्था अनदर्शनी मम गिणी स्वच्छन्दचारी मुनी।
ताके लच्छ प्रतच्छ स्वच्छ श्रुत मे बोलू गुरुसे मुनी॥ १॥

॥ दोहा ॥

आचाराग के पाचमे, प्रथमोद्देशक धार॥
वीर प्रकाशित भाव को, कहू करिके विस्तार॥ २॥

घनाक्षरी कवित्त——

त्याग घर नारी गुरुदेव से सिखा उपारी, अविनय कारी गुरु भीख नहीं धारी है।
महा अहंकारी क्रोध भारी मायाचारी ढोंगी लोभ अधिकारी पाप दृष्ट दुराचारी है
दुष्ट परिणामी दुष्ट करमी हिंसक धूर्त, इच्छा मिच्छाकारा रस वश अविचारी है
अमृत उचारी नहीं संशय लगारी घणे, औगुण को धारी साध एकलविहारी है॥३

रचयिता —शास्त्र-विशारद प्रौढ कवि श्री अमीऋषिजी म०

|| दोहा ||

अपछंदा परिवार को, छोड एकेला होय ||
कौन कौन अवगुण वढे, कहूँ सुनो सव कोय || ८ ||

घनाचरी--

एकल विहारी देखि तुरत ही पूछे लोग, क्रोध करी तांमे लड़े वोले वेण खारा है।
वदना न करे वडवडे अहकार भरयो, अधिक कपट जाल लोभ का पसारा है॥
आरभमें लीन रचो करवा प्रवीन थयो, खान पान भोग रोग लपट अपारा है,
मन परिणाम रहे मलिन अमृत सदा, एकल विहारी जिनशासन में न्यारा है॥
धूरत मिलापी मृदु मधुर प्रलापी वर रागको अलापी पेट लोकमें जमावे है।
मै तो तपधारी हू आचारी गुरु साध सारे शिथिल आचारी भारी मोंकोना सुहावे है
रखे कोई देखे मेरे अनाचार यो विचार, आजीविका काजे कछ डरसे लजावे है।
अज्ञान प्रमाद दोष पोष पुष्ट काया करे, एकलके औगुण यों प्रगट लखावे है ॥१०
चाले आप छादे केइ भात कर्म बाधे विनयादि नहीं साधे खाधे आपणे नचीतजी
मोटो अविनीत पीत भागल निलज चित्त, त्यागी धर्मनीत रीत धारी विपरीतजी
छाडी लोकलाज को अकाज करे नाहीं डरे, लोकमें लडे है वडे कडे बाल मीतजी
आचाराग पचमे अध्येनके उद्देशे पेलं, अमृत जिनंद्र वाणी धारो धरी प्रीतजी ॥११

...ी अमृत
...ाव्यसंग्रह

एकल
विहारी

कर्म जोग आय कभी आन डस जावे नाक, जानू डमरूको रोग धाये अकपावे है।
दुख ना खमाय तब कौन हो सहाय तन, माता उपजाय धर्म सजग पलावा है॥
सागारी लजावे मन औषध खिलावे आर पाणी भी करावे साधपणो उठि जावे है।
माठे ध्यान माहो मरी कुगति सिधावे ताको, अमृत चेतावे, मन क्यों ना समझावे है॥

वामा वतलावे तासे वाते लग जावे और चाले चढ जावे सब लाज विसरावे है।
महाव्रत जावे महा विषय वधावे छिप वेश्या घर जावे ताको कोन हटकावे है॥
रोग लगि जावे पाप वात प्रगटावे पास बैठते लजावे लोक नाहीं वतलावे है।
माठे ध्यान माही मरी कुगति सिधावे ताको, अमृत चेतावे मन क्यों न समझावे है॥

कोई साधु साथ नहीं मिलावे स्वभाव नेक, कोई साधु साथ नहीं मनको मिलापी है।
पाले ना आचार करे कपट अपार देवे साधु शिर, आल असम नस प्रलापी है॥
क्रोध मान कपट प्रमाद मिथ्यावाद अग, आलसी अपार अनगार बन्यो पापी है।
गच्छ छोड़ गच्छे फिर एकलो स्वच्छन्द मद, अमृत निमार जीर आणाको उत्थापी है॥

करत विहार कोई पूछे नरनार सब छोड परिवार को क्यों आतम विगोई है।
कोई वोले सूधो कोई क्रोध मे धमाय जाय, मुसको विगार तकरार करे कोई है॥
कोई निज दोष ढाके औरसे वतावे चूक, लोक लखि लेत गुन्हेगार यार योही है।
अमृत विचारया विन न्यारा हो सिधारया तप संजमको हारया ये विगारया भव दोई है॥

उत्तराध्ययन चोथे आठमी गाथामें देख, छांडो रोना विना नहीं मोक्ष मिले भ्रातजी
नटविट चोर व्यभिचारी ज्यों मिलापी तेमे, एकल भी आपणी बतावे चाहे न्यातजी ।
एकल से मिले एक देख हरखावे अति, गूथे है अनेक जाल करे गुप्त घातजी ।
सगसे वैराग्य घटे श्रद्धा विपरीत होय वदना करत लागे अमृत मिथ्यातजी ॥
चोरी जारी खूनी ताको राजा अपराधी जाण, देशमें निकाले मिले चोरा मायजाय के
चोर भी खुशी मे राखे देशका बिगाड करे, लूट खावे माल जन प्रजा को सताय के ।
परिचय करे चोर लार मोठो गुन्हेगार, एकल को देखो उपनय यों लगाय के ।
प्रभु आण भागे सागे भ्रमत अनतकाल, सहे घणो दु ख कहे अमृत सुनाय के ॥२५

उपनय-यथा सवैया—

भूप प्रभु अपराधि कुसाधु कुदूर वजीर आचारज कीधो ।
पक्षोजु गच्छ पती जिम पूज्य रजा विनही अपनो करि लीधो ॥
आर विहार करे परिचे जिन लोपत आण गुन्हो कहि गीधो ।
काल अनत सजा भव केर अमी समझो परमारथ सीधो ॥ २६ ॥

घनाक्षरी—

क्रोध करि लड्यो साधु निकल्यो समाया विना, अन्यगण अंगीकरी रेवारो विचार है।
कल्पे गणाधीशको सो पच रात्रि छेद करो, कोमल वाणी से समझावे हिताचार है ॥

नाहीं कलपे है रेना एकले गीतारथको, जो है बहुस्सुया बहु आगम के धार है।
अप्पस्सुया अप्प आगमीका तो केनाही क्याहै, अमृत विचारधार आणा श्रेयकार है

बोल तेरमेमें कह्यो पूर्वोक्त स्थान घणे, मिलके अगड सुया रेना मत भाखो है।
है कोई आचार कल्पधारी निशीथादि जाण, रहे ताके आश्रित जो मोक्ष अभिलापी है
है तो घणे साधु पण नहीं को आचार जाण, रह्या कल्प भाजे प्रभु याही रीत राखो है
जेता दिन रहे तेनो छेद प्रायश्चित्त पावे, अमृत समान वीर वाणी खुद साखी है ॥

बृहत्कल्प उद्देशे प्रथममें खुलासा पाठ, सात चालीसमो बोल तोल चित्त ठाणेजी
कल्पे नहीं एकले साधुको रात्रो वा वियाले, बाहिर सज्झाय परिठावे काज जाणोजी
कल्पे अप्प सूधादोय तीनत्योही साधवी को आप सु गांय तीनचार जाणो आणोजी
वीर वेण मान्या द्रव्य भाव से समाधि रहे, अमृत एकल झूठी टेक मति ताणोजी ॥

बत्तीस में उत्तराध्ययन प्रभु वैन एन, निपुण सहाय चाहे मिल्या करे चेलो है।
न मिले सहाय गुणाधिक वा गुणे समान, निज हित जान कह्यो विचरे अकेलो है ॥
ऐसे कही थापे सो उत्थापे वीर आगमको, चेले बिन विचरे अकेलो गच्छ भेलो है
अमृत अरथ कोई पंडित से धार भाई, मनघड अरथ करे सो मोह गेलो है ॥२४

बैठ गुरु नैनमे सुऐन सेन केन मान, इंगित आकारी वरज्या को सग टार रे।
मान सहित आण मान स्थान गुरु पास सदा, उद्यमी विवेकी बनी कार्यको सुधाररे

यो गुरु सम्मे अभिमान तजो अकता मे काम सब सातो अवगुण को निवारते ।
पंच महाव्रतो से आगे मात समेत मरेव अमृत समान गुरु माला शिर धारते ॥२२

हरिगीतिका छन्द—

श्री वीर वचनामृत मैंने था कहा है सफा सफा ।
एक्म विहारी मुन कहीं होना नहीं मुझ पर खफा ॥
हित था अहित अपना तुम्ही हो मू खके सोचो जरा ।
फिर न्यायपूर्वक बांधिवो अच्छा बुरा खोटा खरा ॥ २६ ॥

यदि भूल अपना भूमके करि विनय गुरुदुखने रहो ।
कर कोविद क्या आत्मा न बुरा किसी को भी कहो ॥
सुनके करोगे कृपया यदि वीर के कानून को ।
स्वता गमा मत बैठियो पहचा इसी मजमून को ॥ २७ ॥

सुख भावके समभाव मे हित सीख मानोगे सदा ।
निज भूल पर पश्चात के आत्मा करोगे निर्मली ॥
सदा रहोगी ता कभी कालीन भी आ जायगा ।
तप ज्ञान से कर निर्जरा शिव सब कभी तो पायगा ॥ २८

तेरीही कृपातें गण दोप टलि जाय सव, तेरीही कृपातें वर काव्य को अभ्यास होय
तेरीही कृपातें विद्या वुद्धिवल वाधे माय, अमीरिख सफल सफल उर आस होय ॥४

तेरी ही कृपातें घने जड़मति दक्ष वने, तेरी ही कृपाते शुभ जग जस छायो है ।
तेरी ही कृपातें श्रुतसागर को पावे पार, तेरी ही कृपातें गणराज पद पायो है ॥
तेरी ही कृपातें सव आगम सुगम होय, आगममें तेरो ही अखंड वल गायो है ।
सुमति वढाय दे हटाय दे अज्ञान तम, अमीरिख जननी शरण तव आयो है ॥५

महिमा तिहारी भानु सम उजियारी, तिहुँ लोक में प्रचारी भारी दीन हितकारी है ।
जिनजी उचारी सव जीव हितकारी गणराज शिवधारी कही शारदा पुकारी है ॥
सशय निवारी उरधारी नरनारी भवविपदा विदारी निज आतम सुधारी है ।
कहे अमीरिख मोद मगल करनवारी ऐसी महतारी मोको शरण तिहारी है ॥६॥

में तो एक तेरो अवलव दृढ धारयो मात, दया करो वेगि मति-तिमिर विनास दे ।
तेरी ही कृपातें शुभ वनत सुखद काव्य, टले गनदोप वुद्धि विमल प्रकाश व्हे ॥
होजे वरदायी अमीरिख की अरज सुनी, सफल करीजे सव धारी उर आस जे ।
मेरी ओर हेर कृपा कोर यों निहारो नित्य, जानि निराधार हो सहाय निज दास के
एरी माय मेरी सुनि लेरी या अरज अव, हेरी मम ओर जानो चाकर चरनको ।
मेरे उर आश विसवास है तिहारो गुण गाऊ मैं हमेश दु ख दोपके हरनको ॥

जिनस करीजे विणा बुधि को हरीजे तम विरद कहावे दीन पालन करन को।
और किस जाऊँ गाऊँ दीनता सुनाऊँ कैसे मोको तो भरोसो एक आपरे शरन को॥

तेरो ही सुजस सब आगम बखानत है, तूही शिवदाता गजराज को उबारी है।
तूही सब जीवकी दयाल रखपाल मात तू ही दुःखी दीन प्रतिपाल हितकारी है॥
तूही सब ठौर में सहाय होय दीनन के तूही सबै भव्य जग जीव महतारी है।
दास धर्मसिंह की कुमति सब दूर कर एरी महतारी मोको शरन तिहारी है॥९०

मैं तो हूँ अनाथ निराधार दुःखी दीन महा मिमटी करम सब मान किया दरोरो।
तेरो सुजस देखी चित्त अकुलानो तब स्तुति के शारदा शरण लिया तेरो॥
दोष नाही और तिहुँ लोकमें समर्थ कोउ कहूँ मौं तिहि पासे नेक करम निबेरोरी।
तूही दया धारिके अमृत करना को मात धर्मसिंह उर पर पकज धरोरी॥९१

करम आधीन दुःखी दीन मैं अघोरी भये भ्रमत फिरूं मैं भव भावारूप धारिके।
अब तो सह्यो न जाय संकट अपार सब दयो मोहि हाथ मैं निदान रखा दारिके॥
जान्यो भारि और मन मेरो घबरानो तब सुधि बिसरानो रहूँ कैसे मन मारिके।
एक भया उपाय वस भवो न हमारो पति धर्मसिंह आयो मैं शरन महतारिके

माता शासनानी जिनराजजी बखानो तोहि परम प्रमानो गुणखानी सुरपामिनी।
दया रस सानी मति तिमिर को मानो मोहि दीज पद पकजकी सेव शिवगामिनी

भरम अविद्या मति तिमिर विनासो मात, मिथ्यामति-भूधर विदारो वनिदामिनी।
दया करी आज अमीरिख के सहाय होउ, पाहि पाहि पाहि जय जय श्रुतस्वामिनी

॥ कलश ॥ मालिनी छन्द ॥

सकल सुकृत खानी जग त्राता वखानी।
परम पद निसानी तत्वदा सार जानो ॥
कुमति तरु कृपानी भव्य के चित्त आनी।
विमल सुमति दानी जैति श्री जैनवानी ॥ १२ ॥

॥ इति श्री शारदा विनय सम्पूर्ण ॥

तीर्थंकर परिचय

चौबीस तीर्थङ्करों की स्तुति।

१ २ ३ ४ ५
प्रथम ऋषभदेव अजित संभव सेव अभिनन्दन जिनद सुमति मनाइय।
६ ७ ८ ९ १ ११
पद्म सुपास ध्याय चंद्रप्रभ चितलाय सुविधि शीतलजी श्रेयांस गुण गाइये॥
१२ १३ १४ १५ १६ १७ १८ १९ २
वासुपूज्य विमल अनंत धर्म शांतिनाथ कुन्थु अर मल्लि मुनिसुव्रतजी ध्याइये।
२१ २२ २३ २४
नमि नेम पार्श्व महावीर वर्द्धमान नाथ सभी सब ध्याय दुःख जाय सुख पाइये

चौबीस तीर्थङ्करों की मातायें।

१ २ ३ ४ ५ ६ ७ ८
मरुदेवा विजयाजी सेनाजी सिद्धारथाजी मंगला सुसीमा पृथ्वी लक्षमणा बरणी
९ १ ११ १२ १३ १४ १५ १६ १७
रामा नंदा विष्णा जया स्यामाजी सुजसा माव,सुव्रताजी अचिरा श्रीदेवी गुणभरणी

१८ १९ २० २१ २४

देवी माता प्रभावती पद्मावती वप्रा माय, शिवा वामादेवी त्रिशलाजी प्रियकारणी
धारणी रयणकूख चौवीस जिनेंद्र माता,दीजे सुखसाता अमी राप हितकरणी २॥

चौवीस तीर्थङ्करों के पिताश्री ।

१ २ ३ ४ ५ ६ ७ ८
नाभि जितशत्रुजी जितारिजी संवर मेघ श्रीधर प्रतिष्ठसेन महासेन भूपति ।
९ १० ११ १२ १३ १४ १५ १६
सुग्रीवजी दृढरथ विष्णु वासुपूज्य कृतवर्म सिंहसेन भानु विश्वसेनाधिपति ॥
१७ १८ १९ २० २१ २२ २३
शूरसेन सुदर्शन कुम्भजी सुमित्र विजेसेण ने समुद्रविजे अश्वसेन द्यो वृति ।
२४
सिद्धार्थ नरेंद्र ये है चौवीस जिनेंद्र तात, उदित उदित कुलयश चढतो रति ॥३॥

चौवीस तीर्थङ्करों की आयु ।

१ २ ३ ४ ५ ६ ७ ८ ९ १०
पूरव चौरासी लाख बहोत्र साठ पचास, चालीस ने तीस वीस दश दोय एकजी
११ १२ १३ १४ १५ १६
वरस चौरासी लाख वहुत्तर साठ तीस, दश एक लक्ष शांतिनाथ आयु नेकजी ॥

रचयिता —शास्त्र-विशारद प्रौढ कवि श्री अमीऋषिजी म०

१७ १८ १९ २० २१ २२
पंचमु हजार न चौरासी पंचावन तीस दश एक सेम नमनाथ आयु सरजो।
२३ २४
एक सो बहोत्तर बरस महावीर नाथ भमी मगवंत आयु थाप सुचितकरी ॥७॥

चौबीस तीर्थंकरों का देह मान।

१ २ ३ ४ ५ ६ ७
पांचसे धनुष्य साढे चारसे चारसे साढे तीनसे तीनसे अढाई दोयसे प्रमान है।
८ ९ १ ११ १२ १३ १४ १५
डेढ़से सुविध सात सेत असी सत्तर अरू साठ ने पचास पैंतालीस सुसंठान है।
१६ १७ १८ १९ २ २१ २२
शांतिनाथ चालीस पैंतीस तीस पच्चीस बीस पंदरा में दश धनुष्य बखान है।
२३ २४
नव सात हाथ महावीर नाम वर्द्धमान अमृत समान जिन चौबीसको ध्यान है॥

चौबीस तीर्थंकरों के प्रथम गणधर।

१ २ ३ ४ ५ ६ ७ ८ ९
पुण्डरीक सिंह चारु वज्रनाभ चरमजी प्रद्योत विदर्भ दीन पराहक जानिये।

१० ११ १२ १३ १४ १५ १६ १७ १८ १९
नद कन्छप सुभूम मंदिर जस अरिष्ट, चक्रायुध शांत कुम्भ अभिराक मानिये ॥
२० २१ २२ २३ २४
मल्लि शुभ वरदत्त आर्यदिन्न इंद्रभूति, चोवीस जिनेंद्र शिष्य प्रथम वखानिये।
गणधर लब्धिवंत चउदे पूरवधार, असो निरान्ति वसे भाव शुद्ध आनिये ॥

चौवीस तीर्थंकरों की प्रथम शिष्याएँ।

१ २ ३ ४ ५ ६ ७ ८ ९ १०
ब्राह्मीजी फल्गुनी श्यामा अजिता काश्यपी रती सोमा सुमना वारुणी सुजसा विचारीये
११ १२ १३ १४ १५ १६ १७ १८ १९
धारणी धरणी धरा पद्मा आर्य शिवा शुची, दामिनी रक्षिता वर बंधुमती भारी है
२० २१ २२ २३ २४
पुष्पवती अनिलाजी जक्षदिन्ना पुष्पचूला, चंदनबालिका सती शील अधिकारी है।
चौवीस जिनेंद्र पेली चेली गुणवंत सती, असी भावयुत नित वन्दना हमारी है॥७

चौवीस तीर्थंकरों के भक्ति संपन्न भूपति।

१ २ ३ ४ ५ ६
भरतजी सगर अमितसेन मित्रवर्य शतवीर्यजी अजितसेनजी दयाल है,

७ ८ ९ १ ११ १२ १३
शान्तीर्थे मघवाजी पुण्डरीक सोमंधर, त्रिपृष्ठ द्विपृष्ठजी स्वयंभु गुणमाल है॥
१४ १५ १६ १७ १८ १९ २० २१
नरोत्तम नरसिंह पोमाल कुमरजी मुमूम वीर पिजे हरिसेणजी पियास है।
२२ २३ ४
लोगिर प्रसेनजित मेघिक मुनीस्थित धर्मीजिनजी के भक्तियत ये नृपाल है॥८॥

तीर्थंकर ध्यान विधान

रवि पद्मप्रभ शशि चन्द्र मंगल वासुपूज्य जिनेश्वरा।
बुध विमल से अरनाथ तक नमि वीर प्रभु जिन हितकरा॥
गुरु शान्ति पंच प्रभास शीतलजी को नाम मनाइये।
भृगु शुक्र सुविधिनाथ मुनिसुव्रत शनी नित ध्याइये॥९॥

चौबीस तीर्थंकरों के चवन नक्षत्र।

१ २ ३ ४ ५ ६ ७ ८
उत्तराषाढा रोहिणी मृगशिर पुनर्वसु मघा चित्रा विशाखा एवं अनुराधा जानिये।
९ १० ११ १२ १५ १६
मूल पूर्वाषाढा ये श्रवण शतभिषा नाम उत्तराभाद्रपद रेवती मानिये॥

१५ १६ १७ १८ १९ २० २१ २२ २३
पुष्य भरनी कृतिका रेवती अश्विनी मल्लि, श्रवण अश्विनी चित्रा विशाखा वखानिये।
२४
पुण्य भरनी कृतिका रेवती अश्विनी मल्लि, श्रवण अश्विनी चित्रा विशाखा वखानिये।

हस्तोत्तरा नक्षत्रमे वीरश्री च्यवन जाण, अमो या नक्षत्रे यथाशक्ति तप ठानिये ॥

चौवीस तीर्थंकरों की जन्मभूमि ।

१ २ ३ ४ ५ ६ ७
इक्ष्वागभूमि अयोध्या सावत्थी अयोध्या जाण, कचनपुर कोसम्बी वाणारसी धाररे
८ ९ १० ११ १२ १३ १४ १५
चद्रपुरी काकदी भद्दिलपुर सिंहपुर, चपा कपिल अयोध्या रत्नपुरी माररे ॥
१६ १७ १८ १९ २० २१ २२ २३
हत्थिणा ने गज नाग मिथिला औ राजगृही, मथुरा सोरीपुरी वाणारसी विचाररे
२४
महावीर कुंडलपुरी में यो चोवीस जिनराजकी जनमभूमि अमी सुखकाररे ॥११॥

चौवीस तीर्थङ्करो के लक्षण ।

१ २ ३ ४ ५ ६ ७ ८
वृषभ ऋषभ गज हय कपि भालको, पद्म कज स्वस्तिक मयक चिन्ह गावे है ।

चौवीस तीर्थङ्करों के केवलज्ञान वृक्ष।

१ २ ३ ४ ५ ६ ७ ८ ९
वड सप्तपर्ण शालो राजादनो प्रियगु ने, मनाड सरस नाग मल्लिका प्रधान है।
१० ११ १२ १३ १४ १५ १६ १७
बिल्व तिंदुक पाडल जम्बु सु अश्वत्थ वृक्ष दधिपर्ण नंदी तरु भिलक सुज्ञान है॥
१८ १९ २० २१ २२ २३ २४
आम्र ने अशोक वर चंपक वकुल तरु वेडस धातकी शाली श्रुत वर्द्धमान है।
ध्यानशुक्ल ध्याया घनघाती कर्मनाया अमी लाकालोक प्रकाशक पाया दिव्यज्ञान है॥

चौवीस तीर्थङ्करों के गणधरों की संख्या।

१ २ ३ ४ ५ ६ ७ ८
चौरासी पचाणु एक शत दो एकसो ग्यारा, शत एक सोने सात पचाणु विचारो है
९ १० ११ १२ १३ १४ १५ १६ १७
त्राणु अठ्यासी वियासी सतोत्तर गुणतर, सत्तावन पचास शत पैतालीस धारो है
१८ १९ २० २१ २२ २३ २४
तेतीसने अठ्वोस अठारे सतरे ग्यारे, दश ग्यारे महावीर धीर गुणधारी है।
चउदेसे वावन चौवीस जिन गण ईश, अमो कर जोडा मन वंदना हमारी है॥

चौबीस तीर्थङ्करों की केवली संख्या।

सेस बीस बावीस पनरा चौदा तेरा बारा ग्यारा दस सेस साढी सात गुणधार है
सात साढी पट पट साढी पंच पंच साढी चार ग्यारासे बत्तीससे भाईत है
अठारासे बावीससे अठारासे सोले सात पनरासे पारस हजार सार सन्त है।
सातसे चौवीरजिन केवली मुनीश हुवे करम खपाय अमी सासिया अनत है॥

चौबीस तीर्थंकरों की साधु संख्या।

सहस चौरासी एक लख दोय तीन लख तीन लख बीस सेस साधु गुणधारी है।
तिलख हजार तीस लख तीन लखे दोय एकने चौरासी सेस बहोत्र अधिकारी है॥
अडसठ छासठ चौसठ ने बासठ साठ, पचास चालीस तीस बीस सेस जारी है।
अठारसा सोला वीरनाथ के चौदा सहस अमी भावयुक्त नित्य वन्दना हमारी है॥

चौबीस तीर्थंकरों के निर्वाण नक्षत्र।

अभिजित मृगसिर आर्द्रा पुष्य पुनर्वसु, चित्रा अनुराधा ज्येष्ठा मूल मेघकारी है।
पूर्वाषाढा धनिष्ठा उत्तरा भाद्रपद आश्व रेवती रेवती पुष्य भरणी ॥
अश्विनी रेवती भरणी श्रवण अश्विनी चित्रा विशाखा ने स्वाति शुभनक्षत्र साक्षाकारी है
कर्म खपाय अमी पाया निर्वाण पद, चौबीस जिनेंद्र सदा वन्दना हमारी है॥१८

॥ इति श्री तीर्थंकर परिचय सम्पूर्ण॥

श्री तिलोकाष्टक

उत्तम व्रत धारे दूर पातक हरन हारे विपत्ति विदारे आप अमृत के प्यारे थे।
ज्ञान संयम मतवारे दान करुणा मतवारे, चित उज्वल हितवारे षट्कायगुतें न्यारे थे
तत्त्वमारग उचारे किये कुमतिसे किनारे, होन शिवके दुलारे सुमति के प्राणप्यारे थे
वचन अमृत उचारे अमर धामको पधारे, ये तिलोकरिख स्वामी जगजीव रखवारे थे ॥१
मात तातुके नाते नहीं रहे जग छाते विश्वमांहि प्रगटाने जास महिमा बखाने है।
सुधा-रस सुनकाते घने जीव हरखाते, दया भाव उर आन जैन तत्त्व को पिछाने है
क्रिया दान देत दाने मोन मारग बताने, जिनराज गुण गाने नहीं नेक अरमाने है
आज अमृत गुण जाने वे तिलोकरिख दाने, हाय! छिनमें विलाने मेघइंद्र ज्यों छिपाने है
मनमें वैराग धार त्याग के संसार शिव मार्ग चित्त लाग मन पातकतें न्यारे थे।
उदे बड भागे जैनागम अनुरागे सागे, आपके प्रताप आगे मिथ्यामति हारे थे॥
वडे वडे पंडित के खंडित किये है मान, अमृत बखाने धर्म दीपक उजारे थे।
महा गुणधारे ज्ञान क्रिया-धनधारे वे तिलोकरिख स्वामी जगजीव रखवारे थे॥२
सकल संसार सुख जानके अनित्य चित्त, त्याग भाव धारी हितकारी शुभ मत है।
आश्रव प्रमाद टार राग द्वेषादि निवार, विषय कषाय लाय ठारी उवरत है।
धारे जिनकेन मोक्ष पथ सुख देन गेन, देखत नीहार भव्य हिय हुलसत है।
अमीरिख कहे पाल संजम विशुद्ध चित्त, स्वामीजी तिलोक सुरधाममें बसत है॥

हिंसामति-हितशिक्षा ।

शासननायक सुखदाई सब जीवन को, निरवद्य वाणी उपदेश फरमायो है ।
छहो काय जीव निज आतम समान जान, दीजे न असाता यही भेद दरसायो है ।
जीव दया धरम यों सबही पुकारत है देखो जैन आगम मे ठाम ठाम गायो है ।
अमीरिख कहे मति कुमति ने हती तेरी, हिंसा मत थापी तेरे हाथ कहा आयो है ॥
धारो जिन वैन जीवदया सुखदेन जाते पावे सुख चेन सबे कष्ट मिट जावेगो ।
हिंसामें धरम थाप बांधेगो करम आप, पाप के प्रताप से संताप दुःख पावेगो ॥
कीजिये विवेक नेक दीजे यह टेक छाड, एक दया धर्म तोहि मोक्ष पहुँचावेगो ।
आवेगो न सीधे राह पावेगो तू सीधे फल, अमीरिख कहे रोय रोय पछतावेगो
सुने नहीं वानी कुमतिके ग्रथमानी निज शुद्धि विसरानो ताते उधो मत धारयो है
सुन सुन टोका किया करुणाका भाव फीका,सम्यक्त्व अंकुर जड़ मूलते उखारयो है
हिंसा माही राचरह्यो झूठो मत साच मानो काचके भरोसेसार चिंतामणि डारयो है
अमीरिख कहे भाई विना पहचाने धर्म, सुनरे मयाने नर जन्म क्यों बिगारयो है
चैत्य शब्द देखे तहां ठाने जिनमूरत को, मोह मद अंध फंद रचे ग्रंथ झूठे क्यों ?
अष्ट द्रव्य पूजा और सतरे प्रकार आदि भाखत नि शक शुद्ध-मारग से रूठे क्यों
धरममें हिंसा करे हरख प्रशंसा चित्त लावत न सांसा शठ जानि विष घूटे क्यों ?
अमीरिख कहे निराधार दीन प्राणिनको,ऐरे हो अज्ञानी तूं निशंक होय लूटे क्यों

करम के सारे शिवमारग से न्यारे,त्या मूल से उखारे छहों कायको संहारे हैं।
हारे हैं अमोल भव कुगुरुकी धारे केन, एन मग त्यागी धरे शीस अघ भारे हैं॥
आगम उचारे पै विचारे ना मरम वीत, राग काज हने जीव मोह मन धारे है।
अमीरिख कहे अध मंद मतवारे घने, जैन मत वारे ऐसे वने मतवारे हैं ॥६॥

सावद्य रु निरवद्य यों वाणी से परख परे, करताका हार्दिक भाव सो जनाये हैं।
सावद्य ना उपदेय यामें नहीं संशय तो, वीर अनुयायी कैसे सावद्य सुनाये हैं॥
देखो ज्ञान नैनसे विचारो पक्षपात छोडी, आचारांग आदि जहां नवर गिनाये हैं
यामे तो देखो प्रथम रहे ना अधूरो काम, अमृत सब ठौर वीर वचन मनाये हैं॥

मत भेद लुब्ध,तामे ग्रथजाल ऐसी बढी, कहूं क्या बनाय बात कहे तें लजात हूं।
प्राकृत संस्कृत आदि भाषामें अनेक ग्रंथ, रचिके प्रसारे जग जाहिर जनात हूं॥
सावद्य आदेश उपदेश भरपूर ऐसे, निमित्त वेदांग नाम लेते सकुचात हूं।
कोक जैसे निंद्य ग्रथ करता श्रीजैनाचार्य, यातें कोड बातका मैं एकही सुनात हूं॥

काहेको बढावे रागद्वेष क्लेश पक्षपात, होय कर्मबंध जो तू ज्ञाता तो पिछानी ले
होवेना निवेरो चिरकाल लग लड़वेसे, प्रथम सावद्य निरवद्य, भेद जानि ले॥
ऐरे मतवारे प्यारे आतम को तारयो चाहे, एक मेरी सीख हितकारी हिय ठानि ले
कलिके आचारजके ग्रथ भ्रम जाल तोरि, अमृत एकादशांग वीरवाणी मानि ले॥

निश्चे राखी छाडे व्यवहार तो न चले कार, धन रागी काढे ज्यों गीवालो मालकार है।
स्याद्वाद नयसे विचार अमीसार धार, आगममे निश्चयने मोटो व्यवहार है ॥४

केते व्यवहार केते निश्चय को ताणे पै न जाणे परमार्थ योंही लडत गिवार है।
दोय चक्र चाले रथ अरु पशु नेन पर, माने समवाय न्याय सापेक्ष विचार है
रवाई के नेत्रा सम दोनों हाथे राखे ग्रही, गोण मुख्य तो ना गिने मस्तवन का मारहै
स्याद्वाद नयसे विचार अमीसार धार, आगममे निश्चयने मोटो व्यवहार है ॥५

मामने का ग्राम भी न जाय मुखमाही त्रिन उगमके काम सिद्ध ठोर ना लगार है
अनेकांत माने ताको सम्यक वखाने प्राणी एक पक्ष ताणे सोही मिथ्यात्वी असार है
वीतराग वाणी में एकांत की निशानी नाही, सुगुणा विवेकी करे परख विचार है।
स्याद्वाद नयसे विचार अमीसार धार, आगममें निश्चय ने मोटो व्यवहार है॥६।

卐

प्रकीर्णक

निंदा स्वप्नोपदेश ।

आप पर बंधे नहीं बंधे है पातक जब पग तब लागे आप तामे तो डुबावरे ।
कु मखल धाम न निवारत कायकेकी बध नम न हकाय पर धूल सो बचावरे ॥
मरिनी मताय नहीं कंटक बिछाय कैसे या हित सुजान तू निवारी पर पावरे ।
औगुण बिरान कभी निंदा पाप बधि मती अमोरिख अपनी विवेक आप बावरे ॥

॥ दोहा ॥

तुझे पराई क्या पड़ी तू अपनी तो निबेड ॥
तेरी नाव दरियाव में बाकि रही सो खेड ॥ १ ॥

पापीके पड़ोसी बसी क्यों तू दिलगीर होय तेरो ना बिगाड़ कछु करेगा सो मरेगा
परबाऊ काइ तासे अपने क्या काम होय आपेके उपाय भैया तमो काज सरेगा ।
दूसरे की धूल मत डार सिर अपने तू नीरख्या करम बांधी दुर्गति में परगा ।
नाना भांत सांग कछु करिके खुलावे बेह अमोरिख होषा गुणधारी सोप तिरेगा ॥

श्री वीर प्रभु के दश स्वप्न ।

मारि पिशाचसे युद्ध किन्यो प्रभु यो विध कोकिल पंखी सुहावे ।
रत्न की माल विशाल सुगंधयुत पद्म सरोवर पंकज वाये ॥

पार भये भुजसे उदधि रत्र मानुप उत्तर भ्रांति विटाये।
मेरुकी शीश विराजित वीर दशों स्वपने के प्रभु फल पाये ॥ ३ ॥

दश स्वप्नो का फल।

मोह हन्यो वर उज्वल ध्यान विचित्र ही भावको जान लिये है।
दो विध धर्म थपे चउ तीरथ चौविध देव ही सेव किये है॥
पार ससार पमेलियो केवल त्रिजग मे जसनाद छये है।
परिपद् माही दियो उपदेश अमीरिख यो फल वीर लिये है ॥ ४ ॥
राम रेवाडो करे रघु सेवक राचे गोविंद को रास रचाने।
मोमिन ताजिया जैनी रचे रथ मागि के भूपण वस्त्र पेनावे॥
न्हावत गावत वाजत नाचत वे हास्य दोस्त के सौर मचावे।
गाम में फेरि अमीरिख तोरि विगारिके धर्म की हासी करावे ॥ ५ ॥
मदिर मसजिद राम खुदा वर नाम धरे गुरु पंडित काजी।
वे उपवास वे रोजा रखे नित सध्या करे वे वने है नमाजी।
जज्भमें आव गगाजल लावत ये करे तीरथ वे बने हाजी।
पक्ष वधे अपने अपने रिख अमृत सत्य से साहिब राजी ॥ ६ ॥
वेश्या व्यभिचारिणी दृढावे शील पतिव्रत, वधिक अहिंसा सिद्वातको बखाने है।
कृपण जचावे दान-पुण्य की उदारता को, कामी जन इन्द्रिय-दमन मन ठाने है॥

अब तो पधारी दीजो वेगदी दरस माने, माणी आतमा तो आखी पाप थीज भरी है
काइ पण गुनो मासे वयो वे तो कीजो माफ, कहे अमीरिख माणामे तो भूल नरी है

अर्द्धमागधी भाषा का काव्य।

चउगइ भवरूखसंसार कतारे जीवो, भमइ अणाइ काला सुहदुहे लहइ।
पुण्णजोग णरजन्म अज्जखित्त सुकुल च, दीहाऊ अहीण पचिंदिय कायं लहइ॥
सुसाहु सजोग सुत्तरुइ परम दुल्लहा, सद्धा संजम वीरिय जिणवाय वयइ।
मुक्खमग्ग लद्ध सार गिण्हइ परम धम्म, अमीरिसि वय जन्म जरा कट्ठ दहइ॥

बारह मास श्लेष काव्य।

चेत भवि धार ज्ञान संजम वैसाख होय, जेष्ठ पद आषाढ समान सुविचारिये।
श्रवण आगम सुणो धार भद्र पद रोक मन अश्विन को कातो कपट को टारिये॥
मृगशिर सिंह जैसे काल गही लेगो ताते पोष पट्काय महामुनि पद धारिये।
फागुणमें फाग सखी सुमता के साथ खेल, अमीरिख ऐसे बारे मासको उचारिये॥

एकाग्र-चित्त-प्रशंसा।

नागरीको चित्त जैसे गागरीके माही रहे, सागरके संग ज्यों मराल मन धरयो है।
नटवी ज्यों नृत्य ध्यान अटवी सो करी प्रान, अलि मन पुष्प मकरंद संग थरयो है॥

चातक ज्यों स्वाति घन दीपक पतंगवत केके घन कोकिल मंजरी मन हरणा है।
समीरिन ज्यों सांचो प्रेम नम है सफल ताके दुविधा मिटाय इक चित करणा है॥

जंबू चरित्र के दृष्टांत संग्रह नाम।

मधुबिंदु महासरा मामे मोसरपरा वग-किरसान काग बानर पिछानिये।
धमिस्त पुरुष हेमकार विद्याधर संख पक्षिसिन्धु कपि सिद्धिबुद्धि मूरख जानिये॥
गोमोड भाजन्द पंटी मित्र विद्युत्मा और ललितांग हेतु सब एकुएसम मानिये।
तीन मनभासे और आठ भी नारी मित्र अमण समान आठ जंबूक बतलानिये॥

महावीर पर संगम कृत उपसर्ग।

रज बरसाई डंस मच्छर दुःखकिना और सांप बिच्छू मूसे भील रूप दुःख दीने हे।
व्याघ्र हा विसारे हाथी गर्जन प्रकार किये कलिका महापवन मेघ तब कीने है॥
पिशाच भवान माथे ताहके सकल मोह, बिम्बकादि देवअम्बा सोइमें मलीने है।
एक रजनीमें किये संगम परीसे बीस, अभी महावीर धीर भारम ध्यान लीने है॥

समवसरण की उत्कृष्ट स्थिति।

समोसरण शक इंद्र रच्यो रह आठ दिन, ईशान इंद्र भी कियो पो अर्द्धमास है।
सनत्कुमारेन्द्र कीयो रहे एकमास महेन्द्र कीयो पोष मास स्थिरवास है॥

ब्रह्मेंद्रको कीधो समोसरण चोमास रहे, शेष सर्व इंद्र दश दिवस त्रिमास है।
अमीरिख कहे ज्योतिषीको अर्द्धमास रहे, समोसरण स्थिति उत्कृष्ट ए प्रकास है ॥२४

सर्व लघु अक्षर काव्य।

समज समज नर सकल भरम हर, भज मन वच तन वश कर सब जग।
करत जतन पर वदत वचन सत, तजत दरब पर अवरम धन तग ॥
अघ खय कर सब लहत अचल गत, जनम मरण तज गहत अचल मग।
अमरत वच सत धरत सजन मन धरम शरण गत न रत भव अथग ॥२५॥

सत्तावीस वकार का काव्य।

वापिको[1] अनूप वप्र[2] शोभित सुरूप वन[3], वाटिका[4] विटप[5] वल्ली[6] वारि[7]हूके ठाम है।
विबुध[8] वणिक[9] वैद्य[10] वाहिनी[11] विहार[12] वर, वस्त्र[13] वित्तकोष[14] चारों वरण[15]के धाम है ॥
वनिता[16] सु व्रतधारी[17] वेष[18] वागीश्वरी[19] वर, वाचयम[20] वेश्या[21] वाजि[22] वारण[23] ललाम है।
विनय[24] विवेक[25] नर वार[26] विद्यावंत[27] घने, अमी नृप पुर छवी अति अभिराम है ॥२६

रत्न अन्योक्ति।

ऐरे दधिनद तेरे गुण है घनेरे किंच, राढा मणि सग पाय लुपित रहाने हो।

वानी या परत गति तेरी ये विचित्र अत्र विधि वश मग्न जन रागमें रहान हो ॥
गुरु मनमोहना सुखमेसी पड़ी है निज गुणी मोहरी सुरव हाम परमाने हो ।
मूप वानी मानी हर मूरख भये राखो तब अमृत दमास रख परम अमाव हा ॥

सुवर्ण और सुगन्ध ।

स्यागवर्ते पाये हो गिरेश रक्ता मचान करी सोह मैन भये सोहित हमारे है ।
रक्ता संगोत काव्य सारिस्यादि सेवा रुचि सौम्यता में सुखगिरा अमृत सुधारे है
ध्यान निज जिनपद नीरजमें निरी दिन सम्यक सुलाम उपसान भी उपमारे है ।
सुवर्णमें गंध नहीं गंध में न कंचन पै सोनो भो सुगंध मुनि आपमें निहारे है ॥
मगपर रक्ता से परमप्रेम निरंतर राखो गुरु कर्म भव हरि से प्रवीणता ।
तीन पद व्यवेद करी गोत्रमाव वश समसिद्धि स्यागो राग मोहन माने पीनता
पंचमी समान वार व्रतमें भी गयो गिरा अंगु शारदे भयो राखो मद्र दीवा सोनता
जग पद पद्मसे सुधारसा रखावे सदा कीजिये अमृत अमरत्व पद पीनता ॥२६॥

नौ कारणों से रोगोत्पत्ति ।

अति एक आसन से रहे भोजन करे पचिया बिना ।
अति नींद अति जागरण बाधा लघु नहीं रोके मना ॥
करे काम भोग विलास अधिका और अति मारग भमे ।
भोजन अगम्यको करत अमत रोग तन नवनिष पमे ॥ ३० ॥

आठ कसाई ।

प्रथम कसाई पशु मारवेकी सला देत, दूसरो कसाई जो पशु को मारि डारे है ।
तीजो अग न्यारो करे चौथो मोल लेने वालो, पाचमो कसाई मास वंचे सो उधारे है
छट्ठो जो पकावे मास सातमो परुसे थाल, आठमो कसाई खावे नरतन हारे है ।
मनुस्मृतिमें यों अमीरिख मनुजी कहत, हिंसक कसाई दुष्ट आठों ही हत्यारे है ॥

दिल का दृढ विश्वास ।

तारे गौतमादि कुवचन के कहनहारे, गोशालक जैसे अविनीत को उधारे है ।
चडकोश अहि देह सम्यक् निहाल कियो, सती चदना के सबे सकट विदारे हैं ॥
महा अपराधीके न आने अपराध उर, शासनके स्वामी ऐसे दीन रखवारे हैं ।
कहे अमीरिख मन राखरे भरोसो दृढ, ऐसे ऐसे तारे फिर तोहि क्यों न तारे हैं ॥

आध्यात्मिक काव्य ।

नरवारी पायकर मन में घाटोल घड़े, आसपूर राखे मन सावरो न भावेगा ।
करियाणो लीधा बिना वनकोरे जायगा तू, पुनाली कमाया बिना तलवाडे जावेगा।
पाचपोर याद राख मालगाम सग लीजे, उदेपुर आया पछे घणो पछतावेगा ।
अमीरिख कहे सगवालाकी जो चोह होवे, वा घरको जान्या बिना कैसे सुख पावेगा

गुरु प्रार्थना ।

यह भव भटा भो लगाए गुरु सिद्धि सौंप मम सत्माइयजी ।
कभि चौसर येक पधार हवे जिन बेन सुधारस पाइयजी ॥
गुरुदेव पीयूष सुलो बरखी इतना म हमें तरसाइयजी ।
इन चौदें हमारी कु मोनिक मुग्ध यह गुनी दरसाइयेजी ॥ १४ ॥
दरोन सीध कृपा करिके भवकार भयो जिव धर्म उछाव में ।
पाज भये धाम दियो न हमें दिन बीत गये किसने चित चावमें ॥
का अपराध कियो हमरो पर ऐसो न चाहिये धर्म के माव में ।
काहे पियूष हत हमको तरसावत हो रहो पक ही गाव में ॥ १५ ॥

जीव की स्थिति ।

या जिनधर्म बिना गति जीवको काहु मई नहीं आय उधारी ।
यदपि रहा मन पुरुगलमें मति भ्राम रहो पट मर्म पधारी ॥
यदपि श्रीगुरु के उपदेश रवि किरना न करे उजियारी ।
सूझि पर न कभू तदपि जिव पंथ पियूष कहे सुविचारी ॥ १६ ॥

मनुष्यों के नामों पर से आध्यात्मिक उपदेश ।

रागद्वीषसे संग पाय भारको है गुमानचन्द, फूलचन्द होय नयाचन्द न मनायो है ।

हठेसिंग मनधार जप्यो न केवलचन्द, रूपचन्द पाय दुलीचन्दजी कहायो है ॥
भूल्यो भगवानचन्द वण्यो सरदारसिंह, दानमल नेमचन्द चित्त न वसायो है ।
अमीरिख कहे सुखदेवकी जो आस होय, धारले धरमचन्द ज्ञानचन्द गायो है ॥
मनछाराम वश होय बाधत करमचन्द, मानसिंह माइदाम तामे प्रेम ठायो है ।
धनराजजी की मन धारत उमेदचन्द, भागूजी वश जमराजजी गमायो है ॥
सुखलाल माहे जीवो रह्यो है मगनमल, उदेचंद आयो नर तन पछतायो है ।
अमीरिख कहे प्राणी कालूरामजी से डर, ज्ञानचन्द मोतिधार खीमजी कहायो है ॥
हँसराज कर कर जोडत कनकमल, मनम हरखचन्द अधिक धरत है ।
फतेचन्द आस करे होनत फकीरचन्द, मानचन्द सेती प्यारचन्द तू करत है ॥
खूबचन्द देख देख भावे नहीं जोगराज, उत्तमचन्द की चाल छोडके फिरत है ।
अमीरिख कहे नित भजले तिलोकचन्द, लाभचन्द संग लेके संसार तिरत है ॥
हीरालाल जैसो पाय करमों का रणछोड, मोतीलाल सीस छायो तासे मन डररे ।
सतदास देख देख वण्यो है तु नंदराम, सोभाजी कू वार जगन्नाथ ध्यान धररे ॥
भूलेसिंग छोडे तब होवत सोभागचन्द, मदनजी त्यागे से आनन्दराम घररे ।
अमीरिख कहे चेत चेत भाई जोवराज, दयाचन्द धारे सेती होवत अमररे ॥४०॥

चोखा और फोतरे का दृष्टान्त ।

एक दिन चोखो करी मान फोतरा से कहे, छोडदे हमारो संग काइ काम आवेगा

एता माहीं घरधणी आयो है चलाय जहा, दखी मातो गाय वाड़ कूदी गई नाम है,
सकी नहीं भाग दूजी खेत धणी मारी घणी, लाठी पथरासु मारी दीधी अति त्रास है।
वंधन से वाधी गाय पूछत पूछत घर, गाली मुख कंतो गयो मालिक के पास है।
करी है लड़ाई अति लोक वहु मिल्या आय, गाय धणी छोड़ाई करीने अरदास है॥
समझीने गयो घर पाछेसु गायको धणी, डींगलो लेईने तस वाध्यो गलमाही है।
पगमाही वाध्यो काठ दीवो है वहुत मार, फिरत फिरत फेर मिली मानी गाई है॥
पूछत कुशल क्षेम गई गेणो पेरयो केम, वोली सुदी गाय परताप थारो वाई है।
अमीरिख कहे भवि धारिये दृष्टात चित्त, खोटी सगति कियासु ऐसा दु ख पाई है॥

जीव रूप द्रोण में पुण्य रूपी मिठाई।

एक सेठ दूने में मिठाई भरी लायो घर, जरी के रुमाल में लपेटी ऊँचो धरे है।
खायके मिठाई दूनो फेकत वजार वीच, जूता से कुटायके अशुचि ठौर परे है॥
तैसे जीव दूना सम पुण्यकी मिठाई भरी, आदर वधारे लोग खमा खमा करे है।
पुण्य खिस जात तव भ्रमत कुगति माही, अमीऋषि कहे नाना भाति दुख भरे है॥
एक सेठ कहे प्रिया लीजे एक भैंस मोल,वोलो त्रिया वेगी करो विलव लगावो क्यों ?
पति दरसाई सव दूधकी मलाई मेरी, सा कहे अवेरु भैंस तरी तुम खावो क्यों ?
राड मेटवेको एक नर फोडे भाजनको, भैंसने उजाड्यो खेत गाली मो सुनावो क्यों
सेठ कहे कैसी कही भैंस है हमारी तव, कहे अमीऋषि यूं ही झगडो मचावो क्यों

एक जड़मति को सब पुरवासी मिल बोलत मूरख नाम ताम दुःख मान्यो है।
गयो परदेश भयो तपित भारत मान पंडुनि को गाढी जब पीवत ममान्यो है
मून्यो तिन शीस एक बार भयो मूरख है, पूछत है तासो मोरा कैसे पहिचान्यो है।
ताम पनिहारी कहे सब्द उचारी बात कहे अमीरिख तोम बचन ते जान्यो है॥

एक नृप बीरव्यके राजुस्व जायो तामें देखके अधिक गज राजा यों विचारे है।
सिंह वेष भागे गज सोची पकराई आन खाल पहेराई जिन सिंह अनुसार है॥
बढ्यो सबी सेना जिन भागे जुट सिंह रूप हाथी देखी मू सा आन राम एम हारे है
कहे अमीरिख जित माही सुविचार देख गुण विना वेष कछु काज नाही सारे है।

एक सेठ माहेश्री दुकान पे व्यापार करे, लाभ जानी सार करे भाड़ो भी चुकावे है
कुल व्यापार पन जाने नहीं लाभ कछु दुरत ही छोड़के अनेरे ठाम जावे है॥
व्यापारी समान संत माहेश्री दुकान देह, लाभ जानी सार करे साता उपजावे है।
जाने नहीं लाभ तब देह पोसराम देख अमीरिख लाभ धर्म मोक्षफल पावे है॥

एक सिंह काननमें जाय विनाशो तरा मिलि सब जंतु जारी कोपी सुविचार के।
भाग्यो एक स्याल जाके गयो है विलंब करी कुपित ह्वये पूछ्यो सिंह ललकारके॥
स्याल कहे स्वामी मार्ग घेरयो अन्यसिंह मोय मिल कहे जिन संग चाल्यो हित धारके
कहे अमीरिख कूप जलमें बताया रूप, मरयो सिंह प्रतिबिंब निजको निहार के॥

सिंह भय एक मृग भाग्यो पड्यो पास माही युक्ति करी छूटो दूजी जालमें गमानो है
करके प्रयास तोड़ी पलायन भयो तब, आगे दावानल जैसी अग्नि पायगनो है ॥
बची भागो नामे आगे छोड्यो है वनी कमान, भागो आकुलान एक कूपमें गिरानो है
करी क्यों न रह्यो अमोरिख नाना भांत युक्ति, टले नहीं काल चोट निरूँ करी जान्यो है ॥
पालकने श्याम दोष नदसे गोविंद कहे, नेकूँ अश्व पेना पद नरे नेमि स्वामी के ।
पालक तुरत गयो वागमें स्नान काज, नेर रही भाव तब नरे सिर नामी के ॥
पूछे हरि नेम से प्रथम वंदे किन पाय, द्रव्य कहे पालकने भाव श्याम पामी के ।
श्याम अश्व पामी दरमायो भोलो भावहीन कहे अमोरिख सारो नेम शिवगामी के ॥
शिलावट एक नन उन्नर निमित्त जाय, उ गरने लागो अन्नो पत्थर निहारके ।
गाय सिंह मूरति यां तीनोंहा बनाया हुन, भये यथावार ध्यान मुनिय सुधार के ॥
गाय दूध देवे और सिंह उठके मारे ये, दोनो सत्य होय तो ये मूरति दे तारके ।
दोय है असत्य तोजो मन्न केसे तार जाना, कहे अमोरिख मोती नाम विचारके ॥

कपट करने का फल ।

श्याल कहे ऊँट मामा चालो ने चणाके खेत, कपट न जाण्यो ऊँट मगनी निमा गो है
श्याल कहे आगा खेत कोनमें पधारो फरांनो श्याल ऊँट गोनों आवे र चूट लावे है
जबूक भरायो पेट खेत धणी आयो जाणी, बोल्यो मामा मायतो भूकणवार आवे है
ऊँटकी न मानी श्याल भू कके गयो है भाग, लाठी पत्थरा की मार ऊँट मामा खावे है

आपसमें पाचों ही विवाद करे अथ सम, एक एक बात गृही पत्त दृढ राख्यो है।
सरवज्ञ दृगवत दाख्यो सरवग नय, सो ही स्याद्वाद से अमृत अभिलाख्यो है॥

हँस-काक दृष्टान्त।

हँस काक दोय आय बैठे एक वृत्त पर, आपस में स्नेह तिण ठाण्यो सुमसंगसे।
ताही समे भूप एक जानी शीत छाय बैठो, विट करी वायस लगी है नृप अगमे॥
कोपी एक मारयो बाण घायल व्हे परयो हँस, अहो श्वेतकाक भूप दाखत उमगसे
अमीरिख कहे नहीं काक हँस हूँ नरेश, पायो मैं मरण नीच वायसके सगसे॥६१

मूषक पन्नग दृष्टान्त।

जो जो जिण औसरमें शुभाशुभ होनहार, ताही को मिटावे ऐसो नहीं कोई जगमें
काहू चूहे चुप धरी पन्नग पिटारो काट्यो, उद्यम करयो पे जाय पड्यो उवसगमें
कीनो नहीं उद्यम तथापि अहि पेट भरी, बधन से छूट के सिधायो सोही मगमें।
अमीरिख कहे ऐसे समझी सुजान जन, धारया जिनवेण सुख होय पग पगमें॥

श्री नेमिनाथजी और राजीमतीजी के नौ भव।

धनराय धनवती पेले देवलोक देव चित्रगति विद्याधर रत्नवती नारी है।
चौथे कल्प अप्राजित राय प्रीतिमती राणी, ग्यारमे स्वरगे दोनु देव प्रीति धारी है
शंखराय जशोमती राणी दाख पाणी दियो, अनुत्र विमान चौथे देव अवतारी है
नेमिनाथ राजीमती मुक्तिमें पधारया दोई, कहे अमीरिख सदा वंदना हमारी है॥

एक महामूढ के स्वप्नवत् संसार ।

एक महामूढ अविवेकवत स्वपन में, हुवो अति चतुर पंडित गरभार है।
सिद्धांत पुरान वेद न्याय तर्क ग्रंथ कोष, काव्य श्लोक व्याकरण [illegible] उचार है।
बहोतर कला विद्या चउदे निपुण भयो, करी करी वाद जीत्या पंडित अपार है।
जाग्यो तब अक्षर न याद रह्यो एक तन, अमीरिख कहे तैसो जागृते संसार है ॥

एक वंध्या नारी के स्वप्नवत् संसार ।

एक वंध्या नारी तिन स्वपनमें पूत जन्यो, जानत सकल जिन आनंद उछान है।
सोहागणी आय केई गावत मंगल गीत, बटत बधाई मन पूगी मन आन है ॥
वाजिंत्र अनेक वाजे सज्जन सकल मिल, आंगण भी भाय दीनो नामको प्रकाश है
नींद गई खुले नेन हुई है उदास मन अमीरिख कहे तैसे जगत के विलास है ॥८८

संसार में सार वस्तु ।

स्वपन समान ये संसार है असार तामें, आपो तज भूल्यो फिरे मृग ज्यों अज्ञान है
दारा सुत आदि मोह पाश में बंधायो मूढ, करत भगत कूड कपट को मान है ॥
अष्टादश पाप कर बांधत करम शठ, काल मुख जाय मन करे पछतान है।
अमीरिख कहे यामें तप जप व्रतसार, धार शुद्ध भाव तामें होय निरवान है ॥

को दु:खमूल है ? कामिनी द्रव्य, कहो कहा मृत्यु ? कुयश बतावे ।
धार हिए हित सीख सुजान, अमीरिख भेद कही समभावे ॥ ३ ॥

को गुरु ? दे उपदेश भलो हित, कौन सुशिष्य ? सुभक्ति रचावे ।
को महारोग ? ये है जग जाल, कहा उपचार निजातम ध्यावे ॥
कौन आभूषण ? शील मनोहर, तीरथ को ? मन शुद्ध रहावे ।
धार हिए हित प्रश्न सुजान, अमीरिख उत्तर दे समभावे ॥ ४ ॥

त्याग के योग्य कहा जग में ? सुन कंचन नारी कहे गुरु ज्ञानी ।
सेवन योग्य कहा जु भजे ? गुरुदेव पदांबुज आगम वानी ॥
कौन सुसाधु ? नहीं जस चाह, कहो कुण मूढ ? विवेक न जानी ।
जीवन सोहि नहीं कछु दोष, अमीरिख सीख गहो भवि प्रानी ॥ ५ ॥

विद्या कहा कहो ? स्वर्ग की दायक, ज्ञान कहा ? अक्षय सुख देवे ।
लाभ कहा ? निज आतम जानत, शूर कहो ? जो विषै नहीं सेवे ॥
को जग जीत ? रहे वश में मन, विष कहा ? विषया रस लेवे ।
कौन दुखी ? जिनके अनुराग, अमीरिख सार विचार के केवे ॥ ६ ॥

को नर प्राज्ञ सुधीर कहो ? त्रिय काम कटाक्ष से चित्त अडोले ।
है धन्य ? जो उपकार करे पर, को पूजनीय ? सुजान अमोले ॥

पातक मूल ? अविद्या कही कहा धर्म को मूल ? विनय गुरु कोजे।
कौन पशु ? नहीं जासु विवेक, अमोरिख प्रस्न सुधा-रस लोजे ॥ ७ ॥

कौन बड़े रिपु ? कर्म धरी दुखमूल कहा ? ममता अभिमान।
कम सुक्ख सोम ? सबे मधुरातम ज्ञान मिले कहा ? है धर्मध्यान ॥
कौन है तस्कर ? इन्द्रि विकार सुलोभ समा विष विद्या प्रधान।
मित्र कहो किन से करिये ? उपकार भरे जग आतम तूफान ॥ ८ ॥

सवैया इकतीसा।

किनतें रहीये दूर ? पापी खल दुष्टन ते चित्त स न भूलूँ कहा ? कामिनी परित्तये।
मोक्ष अभिलाषी तांकू राखिए कहा योग का ? क्षमा दान मन शम मापन पवित्तयो ॥
कौन नर मूक ? जो न बोली सके समे युक्त ? बधिर को ? सुने नहीं हित अधिकायो।
कौन न मराये पोग ? अमीरिख कहे प्रिय फोनस अंतर सजूँ ? कान निज मित्तयो ॥

सनत्कुमार चक्रवर्ती।

सौधर्मी सभा मझार देवी देव परिवार अवधि प्रयुक्त इन्द्र ऐसी कह बात है।
चक्रवर्ती सनत्कुमार महा गुणधारी रूप है अपार सार निरुपम गात है ॥
नहीं ऐसो रूपवंत अन्य कोई देव नर, तीन लोक मांही जस महिमा विख्यात है।
अमीरिख कहे एक देव नहीं मानी बात रूपमद पमायो चक्र्यो चित्त हरषात है ॥

वृद्ध विप्र रूप कियो हाथ पग डोले सिर, अग सब धूजे नहीं सूझे पूरो नेणसो ।
पणही पोट सीस पर ताक के आयो चलाय, राजद्वारे आयो पोट डारत अनेणसो ॥
पेरायत पूछे आयो कहा से स्वरूप किसो, मारगम एती जूती फाटी कहे वेणसो ।
अमी कहे भूप-रूप देखणे की चाह मुझ, देखूगा दीदार तब पामू चित्त चेनसो ॥

रक्षक चलाय गयो भूप पास ततक्षण, माड बात कहे सब अरज गुजारी है ।
भूप आज्ञा पाय आय देख रूप हरखाय, अहो रूप अहो रूप वाणीयों उचारी है ।
सुण्यो जैसो देख्यो आज आनन्द अपार भयो, राय कहे पूरो रूप नहीं हणवारो है ।
अमीरिख कहे करो स्नान अलकारधार, वहू सभामाही तब देखो छवि मारी है ॥

गंधोदक स्नान करी धारया है अमोल वस्त्र रतन जडित भलो मुकुट सो सीस है ।
कुंडल अनूप कठ हार कड़ा पोचो कर, मुदड़ी अगुलि माही पेरो अवनीस है ॥
रतन सिंहासन विराजे सब साज सज विप्र को बुलायो मन धारके जगीस है ।
अमीरिख कहे विप्र आयके सभा मझार, निरख डोलायो सीस देखे नर ईस है ॥

पूछे भूप विप्रसु डोलायो किण काज सिर, विप्र कहे राजा अब वैसो रूप नाइ है ।
अभिमान करत विणास गई देह तेरो, थूक क्यो न देखे भूप पीकदानी माइ है ॥
कीडा कलबल देख हुवे भयभीत नृप, देवता प्रकासे अब चेते क्यों न भाई है ? ।
साडी सातसे वरस छायो रक्त पित्ती तन, अमीरिख देव गयो गगन सिधाई है ॥५

रचयिता —शास्त्र-विशारद प्रौढ कवि श्री अमीऋषिजी म०

... को सग पाय भ्रम में भुलायो है।
मुगत मारग नहीं पायो है करम वश, ...
धारयो कुधरम और सेव्या है पाखड देव, उजड़ मारग चाल नरक सिधायो है ॥
फूटी नाव अध निरजामक आरूढ होय, तिरवे की आशा करे मध्यमें डुवायो है।
मोह-नींद माहा जीव सोयो है निर्चित नित्य, अमीरिख कहे यूंही जनम गमायो है
एक समे शुभ करमों के जोग देव हुवो, रतन जडित पायो भुवन उदार है।
तिरयच गति माही नाना योनि धारी जीव, जनम मरण सही वेदना अपार है ॥
पायो है नरक भव दु:ख है अनत जिहा, वेतरणी कुभीपाक जम देत मार है।
मनुष्य जनम जोग तिरवे को पाय भव्य, अमीरिख कहे अब हारे क्यों गमार है
सुणो उपदेश प्रतिबोध पाया चार जीव, करजोड विनै कर कहे ऐसे वेण है।
भ्रमत अज्ञान वश अध के समान अब, ज्ञान अजन को आज खोले दिय नेण है
चार जीव चार गोला सम कह्या जिनराय मिट्टी काष्ठ लाख और चोथो गोलो मेण है
अमीरिख कहे अधिकार चोथा ठाणा माही, कहे विसतार उपकारी मुनि सेण है ॥

मोम का गोला।

सुणी उपदेश एक निकल्यो वाहिर नर, देख धर्मद्वेपी करो हास तिणवारी है।
धरमको धोरी हुवो वाध मुंडो वेठो जाय, देवे कोई गाल सुणा रह्यो मौनधारी है
देवलकी ध्वजा सम फिरया परिणाम तस, सुनके वचन दियो धरम विसारी है।
अमीरिख कहे थोड़ा तापसुं पिघल जाय, मेण गोला जैसे नर जाणजे असारी है

देव-वर्णन काव्य ।

....

... .

हिंसा झूठ चोरी सोग मत्सर न भय लेश, प्रेम न प्रसंग हास पास न वसाइये ।
अमीरिख कहे गुण द्वादश विराजमान, ताको भव्य प्राणी नित्य शुद्ध भाव ध्याइये

गुरु-वर्णन ।

गुरु पंच महाव्रत धारी पचेन्द्रिय जीत, कषाय तजत चार जग दूर करिया ।
जाने भाव करण जोग-सत्य कह्या जिनराय, क्षमाने वैराग्यवंत सत्यशील वरिया ॥
मन वच काया सम धारत वारत काम, दर्शन चारित्र ज्ञान-गुण शुद्ध भरिया ।
जीवण की आश भय मरणको नहीं लेश, कहे अमीरिख जाके पद सीस धरिया ॥

धर्म वर्णन ।

धरम परम सुखदायक जगतमाही, केवलि प्रणीत धार तिहुँ लोक नित्त को ।
अहिंसा वचन सत्य अदत्त न लीजे पर, धारिये शीयल व्रत दूर तज वित्त को ॥
समिति गुपति शुद्ध दान शील तप भाव, क्रोधादिक छोड मान वेण चित्त हितको
अमीरिख कहे खंती आदि दश भेद धर्म धारी कर्म-रिपु टाल लहे जग जीतको ॥

डाभ अग्र बिंदु जैसे इंद्र के धनुष्य सम, कुंजर को कान जैसे तरुवर दल है।
अमोरिख कहे चेत चेत हो हुसियार नर, गाफिल रहे ते आगे पडे मुसकल है॥

प्रभु प्रार्थना।

कृपानाथ कृपा करी दुष्ट बुद्धि नाश कर, काम क्रोध मोह लोभ चारो रिपु मारिये
होय दूर अहंकार रुचे चित्त उपकार, शांत चित्त क्लेश नाश कुबुद्धि को टारिये॥
मेरी लाज राखो नाथ मैं तो हूँ अनाथ दीन, कर्म रिपु टार मेरी वाहको संभारिये
अमीरिख कहे प्रभु तारन तिरन आप, दुःख रूप सागर के पार यों उतारिये॥

अभवी पहिचान।

वरसत मेघधार भेदे नहीं मगसूल, अभवि को चित्त नहीं भेदे जिनवाणीए।
जलत जवासो जैसे अति घन वरसत, खारको जमीपै नहीं बीज वृद्धि मानिये॥
तुपको पछारे नहीं मिलत तंदुल कन, निकसे न माखन मथावे कोई पानिये।
सन्निपात रोगी ताको दूध खाड जहर होय, अमोरिख कहे ऐसे अभवी पिछानिये

जीव दया महत्त्व।

जगत के जीव ताको आतम समान जान, सुख अभिलाषी सब दुःख से डरत है।
जाणी इम प्राणो पालो दया हित आणी यही मोक्षको निसाणी जिनवाणी उचरत है
मेघरथ राय मेघकुंवर धरमरुचि, निज प्राण त्याग पर जतन करत है।
जनम मरण मेट पामत अनंत सुख, अमोरिख कहे शिव सुन्दर वरत है॥१३॥

शिकार निषेध ।

सवैया मृगादि केइ वनमें गरीब जीव सभी निराधार ताका कौन आधार है ।
रोझ फिरत निज मास के बचावनको वैरी है मनुष्य याहू न करत सार है ॥
दोउ सब जात वामे कोई नहीं सार करे, अमीरिख कहे अपनी बाजने । अपमरिख
कायर बनाय येस शौकमको करे घात पेरे निरोषा तामे दया नहीं भार है ॥
वेद औ पुराण वाणी सुमिरू विचार रहे, ईश्वर रचो है सारि यह सब भारे है ।
प्रभुके बनाये पशु पक्षी आदि जीव सब तांम मारी डारे हिय न्याय न विचारे है
कु प्रकार पाप केइ करे तु दिराबे ऐड आप समाधान मय ताम ना निहारे है
कहे अमीरिख कर्म न्यायक विरुद्ध देखो "ईश्वर पायक गरीब जीव मारे है" ॥

जिनवाणी स्तुति ।

पाप हरे चित शुद्ध करे शिव वास बतावन को भगवानी ।
कर्म करि विष गारुडी मंत्र अनंत अखंड निधि दरसानी ॥
तारक जहाज समान महौषधि रोग अज्ञान सुधा सम जानो ।
धर्म विवेक हिय प्रगटावन या जग में प्रगटी जिनवाणी ॥१६॥
ताप अज्ञान बसे हिय के मनु चंद्रमा सम है सुखदानी ।
चातक भव्य मिटावन प्यास मनु घन स्वाति सुधा सम वाणी ॥

टालत जन्म जरादिक रोग बडी चितकारन केवलज्ञानी ।
श्रीगणराज प्रकाश करी भवि तारण कारण ये जिनवाणी ॥१७॥
केवलवंत महंत जिनेश प्रकाश करी सबको सुखदानी ।
या सुन होय मिथ्या तम दूर लहे निज आतम रूप पिछानी ॥
जास प्रसाद अनंत तिरे तिरिहैं तिरते जु अभी भव प्राणी ।
या सम अमृत और नहीं धन है धन है धन है जिनवाणी ॥१८॥

स्फुट समस्या पूर्त्तियाँ

मंगलाचरण ।

केवल दरस ज्ञान भानको प्रकाश भयो, संशय तिमिर पुंज दियो है निवारि के ।
चोतीश अतिशै नर पैंतीस वचन गुण, देव पद राजे दोष दश गुण भारि के ॥
लोकालोक द्रव्य क्षेत्र काल भाव भव आदि, भव्य तारवेको कह्यो भेद विसतारिके
अमीरिख कहे ऐसे देव अरिहंत ध्याय, कहूँ मैं समस्या प्रति उत्तर विचारि के ॥१

किन को न रुचे जिन वेण सुधा ।

शुभ शब्द अनूप गभीर महा स्वर पंचम वाणि वदे विबुधा ।
नर नारी पशु सुर इंद्र शची मिल आवत चैन पियूष सुधा ॥

विधवा सिर कीध सुहाग कों टीको।

वैधवता लही पाप उदे तउ नेक न चित्त धरे सुमती को।
छोरि के लाज अकाज करे विषया वश होय तजी शुभ धीको॥
अवर भूषण साज सजी तन वेंधन प्राण चलो पर पीको।
धिक् है धिक् है यों पियूष कहे विधवा सिर कीध सुहागको टीको॥१२॥

पुनश्च।

कुल कान कटा करिके कुलटा अधरामृत बूँद चटा पर पीको।
ठारि अटा तन धारि छटा करि वंक कटाच्छ कटा जनहीको॥
लाय वटा निज नेम घटा उलटा करि काज हटा सुमती को।
हे धिक वेश पियूष गुणी विधवा सिर कीध सुहाग को टीको॥१३॥

विधवा सिर सोहे सुहाग को टीको।

ज्ञान-विराग जग्यो विधवा चित्त सपति सुख लख्यो जग फीको।
चारित भाव पियूष गुनी गुरुणी पद धारण कीन मतीको॥
संजम देवन उत्सव ठानत वेश सुहाग सज्यो शुभ नीको।
ताहि समे लखि लेहु गुनी विधवा सिर सोहे सुहागको टीको॥१४॥

लोह के सुपिंजर में पारस परयो रह्यो ।

पाय नरदेह नेह कीनो ना धरम साथ, पातक के काज दिन रेन ही अरयो रह्यो ।
सुगुरुकी केन हितकारी उरधारी नांहि, अज्ञान मिथ्यात्वको विकारही भरयो रह्यो ॥
जीव पुद्गल को स्वरूप ना पिछान्यो कभौं, मनको मनोरथ सो मनमे धरयो रह्यो ।
अमीरिख वसन लपेट्यो निज गेह सदा, लोहके सुपिंजरमें पारस परयो रह्यो ॥

कैसे विधवा के सुत चारों ही प्रगट है ? ।

काल लब्धि पाय जीव आय जिनशासन में, प्रगट्यो केवल वर दसन सुघट है ।
मोह सुता कुमति को त्यागि गये शिवगति तहां रहे अष्टगुण आतम निकट है ॥
कुमति कुपात्र भई गई जड जीव पास, भइ ताकी प्रिया आप त्यागिके सुवट है ।
अमृत कुमतिके भये हैं सुत क्रोधादिक, ऐसे विधवा के सुत चारों ही प्रगट है ॥

कैसे मध्य रात माहि खरे दोप्रहर है ? ।

अश्वसेन राय घर जनम लियो है जिन, चौसठ सुरेन्द्र आये जहा जिन घर है ।
सुर सुर नारी उर धारि जिन भक्ति सजि-रतन विमान उर आनन्द लहर है ॥
भूषण वसन यान रतन प्रभा अमित, होते ही तुरत भयो त्रासित अंधेर है ।
अमीरिख वाराणसी पुर पौष दशमी को, भयो आधी रात माही सत्य दोप्रहर है ॥

प्रकाशित पुस्तकों की सूची

नाम पुस्तक	मूल्य
श्री पञ्च परमेष्ठी वन्दना (हिन्दी)	)॥
आत्मोन्नति चा सरल उपाय, (मराठी)	)॥।
अन्यधर्मापेक्षा जैन धर्मातील विशेषता ,,	)॥
वैराग्य शतक, ,,	)॥।
जैनदर्शन व जैनधर्म, ,,	)॥
माझी भावना, ,,	)॥
जैनधर्मा विषयी अजैन विद्वानांचे अभिप्राय भाग १ ला, ,,	-)॥
उपदेश रत्न कोष, ,,	=)
मराठी जैन पद्यावली, ,,	-)॥
हिन्दी जैन पद्यावली (हिन्दी)	-)॥

नाम पुस्तक	मूल्य
जैन धर्माचें अहिंसा तत्त्व (मराठी)	-)
अहिंसा, ,,	)॥।
रत्नाकर पंचविंशी आणि उपदेश रत्नकोष, ,,	-)
पद्यात्मक वैराग्य शतक ,,	-)
मार्गानुसारीचे ३५ गुण, ,,	)॥।
जैनधर्मा विषयी अजैन विद्वानांचे अभिप्राय, भाग २ रा, ,,	-)॥
श्री महावीर सन्देश, ,,	)॥
गजल गुलचमन बहार, ,,	-)
श्री तिलोक ऋषिजी महाराज विरचित पद्ये चित्रालंकार काव्य, (हिन्दी)	=)
ज्ञान कुंजर, ,,	=)
शीलरथ, ,,	-)

नाम पुस्तक	मूल्य
गुरु गुण महिमा, (मराठी)	-)।
श्राविका धर्म दर्पण, ,,	-)॥
आलोयणा (आलोचना) (हिंदी)	-)॥
श्री सामायिक पूजा मार्ग, ,,	-)
श्री रत्न ऋषिजी महाराज का जीवन चरित्र, ,,	=)॥
अध्यात्म दशहरा, ,,	।=)
तपस्वी पूज्य श्री केवल ऋषिजी म. का जीवन चरित्र अर्द्धमूल्य ,,	=)
श्री तिलोक ऋषिजी महाराज का जीवन चरित्र ,,	।-)
जीवन चरित्र सहित मोक्षप्रबोध,	२॥)
श्री श्रेणिकचरित्र ,,	१)

पुस्तकें मिलने का पता:—

श्री रत्न जैन पुस्तकालय,

मु. पो पाथर्डी (अहमदनगर)

मुद्रक—

श्री जैनोदय प्रिंटिंग प्रेस, रतलाम